

Fortnightly per copy Rs. 12/- only

ओ३म्

18th July 2017

आर्य  
ఆర్య జీవన్



జీవన్

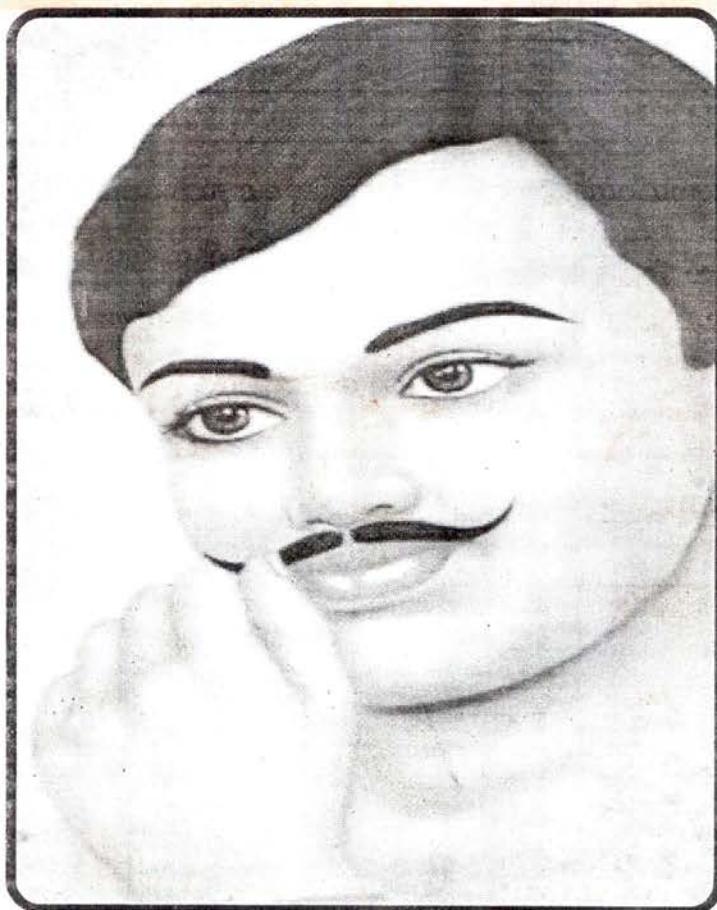
సంస్కृతి సంరక్షణ వ సామాజిక పరివర్తన కా సంకలన  
హిందు-తెలుగు బ్లోగ్‌ప్లాట్ పట్ట పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

dog शेखर आजाद

की १११ वीं जयन्ती

(23 जूलाई 1906 - 27 फरवरी 1931)



दुश्मन की गोलियों  
का सामना हम  
करेंगे, आजाद हैं,  
आजाद ही रहेंगे।



పూర్వాను వుట్టిం  
ప్రశ్నలు ఉన్నాయి ప్రశ్నలను  
అందులో ప్రశ్నలను కూడా ఉన్నాయి దీ  
కిల్లల లు అందులో తేల గా ఉన్నాయి  
అందులో కూడా ఉన్నాయి. ఈ కిల్లల ను ప్రశ్నలను  
స్తుతించాలి కొన్నాయి. అందులో కిల్లల ను ప్రశ్నలను  
ఉన్నాయి కిల్లల ను ప్రశ్నలను ఉన్నాయి. అందులో  
కిల్లల ను ప్రశ్నలను ఉన్నాయి. అందులో కిల్లల ను  
ప్రశ్నలను ఉన్నాయి. అందులో కిల్లల ను ప్రశ్నలను  
ఉన్నాయి. అందులో కిల్లల ను ప్రశ్నలను  
ఉన్నాయి. అందులో కిల్లల ను ప్రశ్నలను

# వేదవాక్య.. మాతృదేవోభవ!

#### *Conclusions*

సుమిత్ర.. తెల్కు!

କାନ୍ତିରୁଦ୍ଧ ପଦ୍ମ (ଅମ୍ବର୍ 1-13-9)  
ପାତ୍ରଶାସନ ମାତ୍ରରୁଦ୍ଧ ପଦ୍ମ ଅମ୍ବର୍ 1-13-9  
ଅଥ ଏ ମହାମହାଶ୍ଵର କିମ୍ବାଦେଇ ଲାଭକୁ  
କାନ୍ତିରୁଦ୍ଧ ପଦ୍ମରୁ ଉପର ଦେଖି କରୁଥିଲୁଗମରୁ  
କାନ୍ତିରୁଦ୍ଧ ପଦ୍ମରୁ  
କାନ୍ତିରୁଦ୍ଧ ପଦ୍ମ, ଅମ୍ବର୍ଦୀର କାନ୍ତି ପଦ୍ମରୁ  
କାନ୍ତିରୁଦ୍ଧ ପଦ୍ମ କାନ୍ତି ପଦ୍ମରୁ କାନ୍ତିରୁଦ୍ଧ  
କାନ୍ତିରୁଦ୍ଧ ପଦ୍ମରୁ କାନ୍ତି ପଦ୍ମରୁ କାନ୍ତିରୁଦ୍ଧ

- యచ్చార్జు మనును చేస్తుంద్యు

# ज्ञान कर्म और उपासना

-आचार्य गवेच्छ शास्त्री

धर्म को धारण करने के लिए ज्ञान कर्म और उपासना का सहारा लेना पड़ता है। यह संसार प्रकृति का विकास और ईश्वर की अभिव्यक्ति है। इसके पीछे ईश्वर का अस्तित्व है। ज्ञान पथ प्रदर्शक है, भले-बुरे का ज्ञान करवाता है। मानव की दवा मानव है। मानव भौतिक वस्तुओं और अपने सम्बन्धियों के प्रति जल्द आकर्षित हो जाता है। उनसे उसे सुख मिलता है। जिन बच्चों को ज्ञान की शिक्षा घुट्टी में मिल जाती है वे श्रेष्ठ बन जाते हैं। ज्ञान है क्या? जो वस्तु जैसी है उसे जानने का नाम ज्ञान है। ईश्वर और आत्मा मानव के भीतर ही विद्यमान है पर अज्ञान की परत उस पर चढ़ी होने के कारण उसे देखा नहीं जा सकता। मानव के भी दो रूप होते हैं। एक तो बाह्य है, दूसरा भीतरी अंश है। कोई ऊपर से साधु दिखाई देता है पर भीतर से वह राक्षस हो सकता है। ज्ञानवान व्यक्ति भले बुरे की पहचान करने में सक्षम हो जाता है।

मनुष्य अपना स्वर्ग स्वयं बनाता है। कुछ लोग अपनी ज्ञान की शक्ति से नरक को भी स्वर्ग बना लेते हैं जो व्यक्ति सत्, चित् और आनन्द को समझता है वह हानि होने पर रोता नहीं और लाभ मिलने पर नाचता नहीं। दोनों अवस्थाओं में एक सा रहता है। वह संसार के सभी कार्य करता हुआ भी अपने मन को ईश्वर की ओर लगाए रहता है। जैसे माँ अपने बच्चे की ओर ध्यान लगाए रहती है और घरेलू सभी कार्य करती रहती है। जैसे सूर्य को बादल ढक लेते हैं उनके चले जाने के बाद सूर्य पहले जैसी ही चमक देने लग जाता है वैसे ज्ञानी व्यक्ति दुख को बादलों की तरह ही समझता है। दुखों का सब से बड़ा कारण हमारी कामनाएँ हैं जो पूर्ण न होने पर कष्ट का कारण बन जाती हैं।

ज्ञान बड़ा ही शुष्क है। एक बार व्यास ऋषि ने नारद मुनि से कहा कि ज्ञान का प्रचार-प्रसार करो तो नारद मुनि ने कहा, 'ज्ञान मार्ग शुष्क और नीरस है बिना कर्म और भक्ति के ईश्वर की महिमा का गान साधक के लिए आनन्द रहित हो जाता है।' ऋषि व्यास ने उनकी बात मान ली और भागवत लिखने का बीड़ा उठाया।

हम जो कुछ करते हैं उसके बदले में कुछ चाह रखते हैं। हम जीवन में शील, धर्म और प्रेम का व्यापार करने लगते हैं। व्यापार कभी अच्छा होता है कभी बुरा। जब प्यार के बदले घृणा मिलती है तो आदमी दुखी हो जाता है। कभी कभी तो अपनी सन्तान से भी प्रेम न मिलने के कारण घृणा करता है।

ज्ञान प्राप्त करने से दक्षता आती है। दक्षता से किया हुआ कार्य सुन्दर होता है। दक्ष व्यक्ति थोड़े समय में सुन्दर कार्य कर सकता है जब कि अज्ञानी व्यक्ति कर्म पर धंटों खर्च करने पर भी कार्य सही नहीं कर पाता। ऐसे ही ईश्वर तक पहुँचने के अनेक पथ हैं। कुछ लोगों को सूर्य की चमक मिल जाती है और कुछ को चन्द्रमा की शीतल छाया। कुछ तो अंधकार में भटकते रहते हैं। अपनी टार्च साथ ले जाते हैं पर वह वहाँ पर काम नहीं करती। स्वार्थ रहित काम ही मनुष्य का भला करता है। लोग आज बहुत सा दान देते हैं पर उस के पीछे उनकी भावना अपना नाम कमाना होता है। निष्काम भाव से किया हुआ कर्म श्रेष्ठ बन जाता है। महाभारत के युद्ध में श्री कृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हैं कि युद्ध करो। अर्जुन अपने बंधुओं को मारना निकृष्ट कार्य समझता है। उन्होंने बताया कि युद्ध नहीं करने से शत्रु बलपूर्वक राज्य हड्डप लेंगे और देश पर विपत्तियों के बादल छा जाएँगे। जिस कार्य से अधिक लोगों का भला हो वही निष्काम कर्म है।

भारत में सभी धर्मों में कर्म का महत्व है। प्रेम से अभिभूत हो कर कार्य करने से व्यक्ति कर्म योगी बन जाता है। कर्म योगी प्रतिष्ठा के लिए कर्म नहीं करता उसके कार्य में विशालता, सच्चरित्रता और सत्य निष्ठा छिपी रहती है। सत्य निष्ठा से कार्य करने से सुन्दरता झलकती है और सुखानुभूति होती है। मानव का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है। शरीर से कार्य करता है, मन से आराधना करता है। इसी तरह आत्मा सब विषयों से अलग आराधना करता है। इसी तरह आत्मा सब विषयों से अलग हो जाती है। आत्मा अकेले में ही सुख की अनुभूति करती है। अच्छा कार्य करने वाले की सभी प्रशंसा करते हैं और उसके पास बैठ कर प्रसन्नता का अनुभव करता है। जिसके पास ज्ञान होगा वही उपासना कर सकता है। लोग प्रशंसा नालायक लोगों की भी करते हैं। चाहे उनमें एक भी गुण न हो। ज्ञान होने से ही उपासना का आनन्द लिया जा सकता है। उपासना भक्ति ही है। ज्ञान व प्रकाश है जो मन मस्तिष्क का अंधकार मिटा देता है। प्रेम भाव को प्रदीप्त करता है। मानवता खुशी से झूम उठती है और संतुष्टि से आँसू बहाती है। श्रीकृष्ण ने ज्ञान और भक्ति का, मेल और मिलाप का सामंजस्य स्थापित किया। ईश्वर की महिमा का गान मनुष्य के लिए आनन्ददायक होता है।

मनुष्य को सर्वोपरि शक्ति विचारों से मिलती है। कार्य जितना भी शुभ गुणों का भण्डार है। सब जीवों को जीवन देता है। मानव भिन्न भिन्न सम्प्रदायों में बैठ गया है। सभी सम्प्रदाय एक दूसरे के पूरक हैं विरोधी नहीं हैं। भारत में सभी मिल जुल कर ईश्वरीय आराधना करके आनन्द प्राप्त करते हैं। यही उपासना है, प्रार्थना है, सुख शान्ति का पथ है।

# క్రావటీ ఉపాకరణ

క్రావట :-

శ్రు - ప్రేవటీ అనే భాతువచే ల్యాట్ ప్రత్యుము అయి - ప్రేవట మరియు ప్రేవట ప్రాచివడకముచే ఆణ్ ప్రత్యుము అయి తద్దితాంత - క్రావట, శబ్దములు, సిద్ధింపబడును, వీటి అర్థము. వినడము - వినిపించడము, మరియు వీటి వ్యాఖ్య ఈ క్రింది విధముగా తెలుసుకొనవలెను.

శ్రుతి : వేదస్య ప్రేవటం క్రావటం చ విశేషం - వర్తతే యస్తిన్ స క్రావట - ।

అంటే ముఖ్యంగా ఏ మాసములోనైతే శ్రుతి అనగా వేదముల వినడము మరియు వినిపించడము జరుగునో దానిని "క్రావటం" అని అందురు.

క్రావటీ పర్వము -

అనాదికాలము నుండి ఆర్యుల సామాజిక మరియు వ్యక్తిగత జీవితములో పర్వముల యొక్క స్థానము కలదు. ఈ భూమిపైన సమస్త మానవ జాతులు ఏదో ఒక రకంగా పర్వములను జరుపుకొందరు. క్రావటీపర్వము ఆర్యుల ప్రసిద్ధ పర్వములో ఒక మహాన్నత పర్వము. ఇది వైదిక పర్వము. దీని నంబంంధ ము వేద ములను చదివించేపారితో మరియు చదివే వారితో ఉంటుంది. గృహ్యసూత్రానుసారముగా పర్వము యొక్క స్థానం సంబంధము వేదము మరియు వైదికులతో అని నిరూపించెను. ఇది ఎలాగైతే ఒక పర్వమో అదే విధముగా ఇది ఒక గృహ్యకర్మ కూడా. గృహ్యసూత్రాను సారముగా క్రావటీకర్మ కూడా ఈ కారణము చేతనే నిర్వహింపబడును మరియు ఉపాకర్మ వేదాధ్యయనము ప్రారంభించబడును. నాలుగు నెలలు వర్షాకాల సమయము. ఈ సమయములో నిరంతర వేదాధ్యయనము జరుగుతూ ఉండేదిది. దానిని వుష్ట మాసములో సమాప్తము చేసేవారు. పైన తెలుపబడిన ఆధారములచేతనే ఆర్య సమాజము కూడా వేద సహాయమును ఇదే సమయమున నిర్వహించును. వేదాధ్య

యనము యొక్క మార్గాన్ని ఆచార్య మహర్షి దయానంద సరస్వతుల వారు చీపించారు. అందువలన ఆయనచే స్థాపించబడిన వేద ప్రచారక ఆర్యసమాజము యొక్క ఇదే కర్తవ్యము ఇది వేదముల ప్రచారాన్ని ఇంకా అభివృద్ధి చేయవలెను.

ఈ పర్వమునకు క్రావటీ అనే పేరు ఎలా వచ్చినది అంటే - ప్రేవటా నక్కల్యతుక్క శోభించబడిన ఈ పర్వమును జరుపుకొందరు అందువలన ఇది క్రావటీ అని పిలవబడుచున్నది. ఈ క్రావటీ శోభించబడిన వలననే ఈ మాసమును క్రావట మాసమని పిలచుదురు.

క్రావటీ మరియు స్వాధ్యాయము -

పైన పేరొన్న విధంగా ఈ పర్వానికి వేదాధ్యయనముతో సంబంధము కలదు. వేదాది సచ్చాప్రాల స్వాధ్యయము ఈ రోజునే ప్రారంభించవలెను ఈ పద్ధతియే క్రావటీ పర్వమును జరుపుకునే సరియైన పద్ధతి. స్వాధ్యయమును జావన అంగము వలె చేసుకొనవలెను. ఈ పర్వములనే ప్రేరణగా స్వీకరించి ఆచరించడం వలన మంచే జరుగును.

"స్వాధ్యయము ఆర్యుల జావనమునకు ఒక అంగము. స్వాధ్యయము పట్ల అనాసక్తిని చూపడమును మన శాస్త్రాలలో నిశేధము ఉన్నది. స్వాధ్యయానికి జ్ఞాన పరివర్ధనములో గొప్ప మహాత్మము కలదు. శతవధ బ్రాహ్మణం 11/5/7/1 లో స్వాధ్యయం యొక్క ప్రశంసన చేస్తూ స్వాధ్యయము చేసేవాడు సుఖంగా నిద్రపోతాడు, యుక్తమసన్స్కరితాడు, తన పరమ చికిత్సకుడగును, తనకు ఇంద్రియాలపై సంయుము మరియు ఏకాగ్రత వచ్చును మరియు ప్రజ్ఞ యొక్క అభివృద్ధి జరుగును".

యుజ్ఞోపవీతము మరియు క్రావటీ -

క్రావటీ పర్వదినమున సూత యుజ్ఞోపవీత ధారణ మరియు పాత యుజ్ఞోపవీతమును విడిచిపెట్టే పరంపర

కూడా ఉన్నది. దీనికి కూడా ఒక ప్రధాన కారణమున్నది. గృహ్య సూత్రాలలో విభిన్న కర్మలను బట్టి విభిన్న ప్రకారక యజ్ఞోపవీతములను ధరించే విధానము కలదు. నివీతి, ఉపవీతి, ప్రాచీనావీతి మొదలగు పేర్లు ఈ ఆధారము పల్లనే కలవు. గృహ్యసూత్రానుసారము ఇంకా పద్ధతి ఏమిటంటే ప్రతిబిక్క ప్రధాన ఉత్తమ యజ్ఞయాగాది కర్మల సమయమున సూతన యజ్ఞోపవీతమును ధరించవలెను. అందువలననే ఈ క్రావటీ పర్వమున యజ్ఞోపవీతమును మార్చెదరు. ఆర్యుల యొక్క నంస్కారాలలో మరియు కర్మకాండలలో యజ్ఞోపవీతము యొక్క గొప్ప మహాత్మము కలదు.

యజ్ఞోపవీతము యొక్క మూడు పోగులు మెడలో పడగానే అతడు పిత్రబుణము, దేవబుణము మరియు బుణిబుణము మొదలగు కర్తవ్యములతో బంధింపబడిన వాడుగా అనుకుంటాడు. ఇక్కడ ఉపనయనము, యజ్ఞోపవీతము, ప్రతబంధము వెముదలగు పదాలు పై విషయాలకు చాలా విశేష మహాత్మతో కూడినవి, ఆచార్య కులానికి విద్యార్థిని ఈ పద్ధతి ద్వారానే తీనుకుంచాడము జరుగుతుంది. అందువలన ఇది ఉపనయనము అనబడును. యజ్ఞము మరియు ఉత్తమ కర్మల కొరకు విదాత్రీ దీనితో జ్ఞానవంతుడు మరియు అధికృతుడు అవుతాడు అందుక ఇది యజ్ఞోపవీతము అని అనబడును. దీనితో అనుశాసనము మరియు ప్రతపాలనమనే ప్రతిజ్ఞతో బద్ధుడువుతాడు అందుకు ఇది ప్రతబంధము అని పిలువబడుచున్నది. ఈ మూడు పోగుల గురించి శాస్త్రాలలో ఇంకా అనేక రహస్యాలు చెప్పబడ్డాయి. అందువలన దీనిని తప్పక ధరించవలెను.

# १९९ वीं जयन्ती २३ जुलाई २०१७ पर

## क्रांतिवीर श्री चन्द्रशेखर आजाद

### जिनके सिंह पराक्रम से ही काँपती थी अंग्रेज सरकार

-प्रियवीर हेमाइना

वसुन्धरा धरती माता आदिकाल से ही अनेक नररनों को अपने गर्भ में रखती चली आयी है, इसी लिए इसी बारे में संस्कृत-साहित्य में लिखा है -

दाने तपसि शौर्य च विज्ञाने विनये नये ।

पिस्मयो न हि कर्त्यो बहुर्ला वसुन्धरा ॥

दान में तपस्या में शौर्य में, विज्ञान में, विनय में और नीति में आश्चर्य नहीं करना चाहिए क्योंकि यह वसुन्धरा एक नहीं, अनेक-अनेक रूपों वाली है ।

सन् १९२९ के ये वे ही दिन थे जब पूरे ही देश में अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध एक लहर सी दौड़ रही थी । देश की तरुणाई भी लुटेरे जालिम अंग्रेजों को सात समुद्र पार खदेड़कर स्वाधीन होने के लिए मचल रही थी ।

बनारस के गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज पर भी कुछ देशभक्त युवक जब धरना दे रहे थे, उनको गिरफ्तार कर लिया गया । उन्हीं में से एक छोटे से बालक को नारे लगाते देख, पुलिस वालों का खून खौल उठा । एक पुलिस वाले ने तो तमाचा मारते हुए उसे हथकड़ी भी पंहना दी । पुलिस उसे घसीटती हुई कोर्ट ले गई । आखिर उसे कोर्ट में अंग्रेज जज के सामने पेश किया गया और मात्र 'भारत माता की जय' बोलने के अपराध में जज ने उसे कोड़ों की भयंकर सजा दी ।

कोड़े खाकर उसी समय अहिंसा का वह वीर पुजारी आग का गोला बल्कर धधक उठा । उसने वहीं भरी अदालत में यह प्रतिज्ञा भी की कि जब तक ईट का जवाब पत्थर से नहीं ढूँगा तब तक कभी चैन से नहीं बैठूगा ।

तुम्हारा नाम क्या है ? तुम्हारे पिता का नाम क्या है ? तुम्हारा निवास स्थान कहाँ है? ये तीन प्रश्न भी उसी चौदह-वर्षीय बालक से बड़े ही रोबीले स्वर में जब

मजिस्ट्रेट ने पूछे तो उसने उत्तर में जो कहा वह सही कहा - "अदालत सुनें और कान खोलकर सुनें - मेरा नाम है 'आजाद !'" "आजाद !!!" "आजाद !!!" मेरे पिता श्री का नाम - "स्वाधीन !" "स्वाधीन !!!" "स्वाधीन !!!" और मेरा निवास स्थान है - "जेलखाना ! या कहना चाहिए कारागार ! कारागार !! कारागार !!!"

उस अल्पायु बालक के इन उत्तरों को ज्यों ही सुना अदालत ने दाँतों तले अँगुली ही दबा ली, फिर वह धधक भी उठी और जल-जलकर भस्म ही होने को थी कि उसने आज्ञा दी- इस दीवाने को पन्द्रह बेंते और लगाई जायें । पर इससे भी वह यज्ञोपवीतधारी देशभक्त दीवाना भला कहाँ डरने वाला था ? उसी समय देखते ही देखते कोमल शरीर पर तड़ातड़ बेंत पड़ने लगे, पर उस बालक के मुख से आह तक भी न निकली । वह वीर-धीर बालक तो प्रत्येक ही बेंत के आधात पर वस यही उद्योग करता रहा- "वन्दे मातरम् ।", "भारतमाता की जय" । "भारतमाता की जय" । उस वीर-धीर बालक का नाम था 'चन्द्रशेखर' । इसी लोमूर्धक अति भयंकर घटना के बाद तो बालक का वही नाम जो उसने अदालत को बताया था, उपनाम उसका बना और कालान्तर में यही 'आजाद' उपनाम, सुनाम बनकर सदा-सदा के लिए अमर हो गया ।

उन १५ बेंतों के प्रत्येक ही आधात ने चन्द्रशेखर के बालहृदय को अंग्रेजों के प्रति धृणा से ही भर दिया था । देश से उखाड़ फेंकने के लिए संकल्पना ही कर बैठा था । दिन-रात वह यही सोचा करता था कि कैसे इन अंग्रेजों को यहाँ से खदेड़ा जाये ।

फरार होकर आजाद उस बम पार्टी में सम्मिलित हो गये जो देश को स्वतन्त्र कराने के लिए भारत में उस समय अच्छी तरह से काम कर रही थी, जो देश से अंग्रेजी

शासन को शस्त्र क्रांति के बल पर उखाड़ फेंकना चाहती थी । रामप्रसाद विस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, अशफाक उल्ला खाँ, सचीन्द्रनाथ सान्याल जैसे नौजवान इसी दल के ही सदस्य थे, जो सिर से कफन बाँधकर अंग्रेजी सरकार को निकालने के लिए प्रयत्न कर रहे थे । यह दल वही था जो वर्मों, पिस्तौलों और बन्दूकों से पराधीनता के जुए को उतार फेंका चाहता था । सशस्त्र क्रान्ति के आयोजन के लिए दल को भारी मात्रा में धन की आवश्यकता थी ही । उस समय के पूँजीपति जितने भी थे, वे सभी हृदय से अंग्रेजों के ही भक्त थे इसी लिए क्रान्तिकारियों को उनसे धन की सहायता मिल ही नहीं पा रही थी । अन्ततः लाचार होकर क्रान्तिकारियों को डाका डालकर धन प्राप्त करने का मार्ग ही अपनाना पड़ा । क्रान्तिकारियों ने शाहजहाँपुर के पास काकोरी रेलवे स्टेशन के निकट ट्रे रोककर सरकारी खजाने को ज्यों ही लूटा, अंग्रेजी सरकार दहल गयी, भय से काँप उठी ।

अंग्रेजी सरकार ने इस ऐतिहासिक ट्रेन डैकेती काण्ड के प्रायः सभी अभियुक्तों को गिरफ्तार भी कर लिया था, किन्तु चन्द्रशेखर आजाद हाथ ही न आ सके थे, क्योंकि उनकी तो प्रतिज्ञा ही यह थी - "फिरंगी मुझे जिन्दा न पकड़ सकेंगे ।"

सन् १९२९ में वाइसराय की गाड़ी पर बम फेंकने की योजना में भी आजाद की भूमिका प्रधान रूप में थी । इतना ही नहीं, असेम्बली भवन में बम फेंकने की योजना भी आजाद द्वारा ही रची गयी थी । भगत मिंह और सुखदेव को जेल से छुड़ाने की योजना भी आजाद ने रची परन्तु देश का दुर्भाग्य या अंग्रेजों का सौभाग्य कहिए असमय में ही वह योजना असफल हो गई । इसके बाद तो फिर जो होना था वही हुआ ही । जब दीपक ही घर को फूँकने लगे कैसे

किस्मत फूट न जाये । दल के सी कुछ कायरों के कारण रामप्रसाद विस्मिल और अशफाक उल्ला जैसों को फाँसी पर चढ़ना पड़ा । देश के वे दीवाने हँसते-हँसते ही फाँसी के झूलों पर झूल गये । विस्मिल और अशफाक के बाद सुखदेव, भगत सिंह और राजगुरु भी २३ मार्च १९३९ को फाँसी पर चढ़ गये । सतलुज की लहरों में आज भी उनकी चिता की राख गरम है और भविष्य में भी वह राख कभी ठंडी पड़ जायेगी, यह भला कैसे संभव है । स्वतन्त्र भारत के आकोश में इन शहीदों के रक्त की ही लाली है । ७ अक्टूबर १९३० को जिस दिन भगत सिंह सुखदेव और राजगुरु को फाँसी की सजा सुनाई गई, उस दिन आजाद बहुत ही क्षुध्य हो उठे थे ।

आजाद सन् १९३० के अन्त में कानपुर को छोड़कर इलाहाबाद चले गये । इलाहाबाद में ही एक दिन सुबह जब पण्डित जवाहरलाल नेहरू आनन्द भवन के अपने कमरे में लेटे हुए थे, सहसा ही उनके कक्ष का द्वार खुला । जवाहरलाल ने देखा कि एक हृष्ट-पुष्ट तेजस्वी नौजवान सामने खड़ा है ।

उस युवक ने गम्भीरता से कहा- ‘‘मेरा नाम चन्द्रशेखर आजाद है मैंने आज तक जो कुछ भी किया है, वह देश की आजादी के लिए ही किया है । मैंने उनका ही खून बहाया है जो भारत की स्वतन्त्रता के शत्रु थे । इस समय मैं पुलिस से चारों और से घिरा हुआ हूँ, पुलिस मेरे पीछे बुरी तरह से हाथ धोकर पड़ी हुई है, आप बताएँ कि मैं क्या करूँ ?’’

जवाहरलाल युवक का मुँह देखते ही रहे, वे उसे कुछ उत्तर ही न दे सके । आजाद पाँच मिनट तक उत्तर की प्रतीक्षा भी करते रहे पर जब कोई उत्तर ही न मिला, दरवाजे से बाहर निकल आये और उसके दो घण्टे बाद ही जवाहरलाल ने सुना कि चन्द्रशेखर आजाद अब इस दुनिया में नहीं है । अल्फ्रेड पार्क में वे पुलिस की गोलियों का मुकाबला करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये ।

हाय, हा हन्त ! २६ फरवरी सन् १९३१ का वह दुर्भाग्यपूर्ण दिन ! जब दस बजे

प्रयाग के अल्फ्रेड पार्क में माँ भारतीय का वह सपूत्र वीर आजाद पुलिस से चारों ही तरफ से धिर गया । आजाद राम नाम का तहमद बाँधे नंगे बदन थे ही और उनकी कटि में पिस्तौल भी बंधा हुआ था ही । जब असंख्य अनगिनत पुलिस उनके सामने बद्दूक और पिस्तौल तान कर गौलियाँ चलाने लगी तो आजाद ने भी अपनी कमर से पिस्तौल निकाला और एक पेड़ की आड़ लेकर गौलियों के जवाब में गौलियाँ चलाने लगे । उनके माउजर पिस्तौल में केवल बारह गौलियाँ ही उस समय थी, पर उनकी एक-एक गौली का निशाना इतना सही था कि यदि पुलिस पेड़ों की आड़ में न होती तो आजाद की बारह गौलियों से सैकड़ों की पंक्ति मौत के घाट वहाँ उत्तर जाती पर जब आजाद की पिस्तौल में केवल एक ही गौली रह गई तो उन्होंने कहा- आजाद आजाद है, वह अंग्रेजों की गौली से नहीं अपनी ही गौली से मरेगा, और फिर अपने मरतक में अपनी ही गौली मारकर भारतमाता का वह सपूत्र चिर निद्रा में सो गया ।

आजाद भारत में सब कुछ है पर आज भी भारतमाता की आँखें गौली ही हैं । वह अल्फ्रेड पार्क के फूलों में आज भी अपने आजाद को ढूँढ रही है । न जानें कब माँ भारती का वह वीर सपूत्र चिर निद्रा से जागेगा ?

आजाद देश में आजाद जैसे शहीदों के ईट और पथरों के ताजमहल चाहे न हों पर इतिहास का यह अमर शहीद, जिसके नाम से ही तत्कालीन सरकार काँपती थी, अपने वीरतापूर्ण कार्यों से युग-युग में अमर रहेगा ही । ‘‘कीर्तिर्यस्य सः जीविति’’ जिसका यश अमर है वह सदा जीवित रहता है । वीर ही नहीं, विप्रवीर आजाद इसीलिए भी सदा जीवित रहेंगे क्योंकि उन्होंने अपने पराक्रमी अनुपम जीवन से अथर्ववेद के इस मंत्र को भी व्यावहारिकता के धरातल पर पूर्ण रूप से सार्थक कर दिखाया- अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम् । अभीषादस्मि विश्वाषादाशामशां विषासहिः॥

अर्थव्य. १२.९.५४  
राष्ट्र-भूमि पर मैं साहसी हूँ, भूमि पर मैं

उल्कप्ट भी हूँ । दुश्मन से मुकाबला पड़ने पर उसके छक्के छुड़ा देनेवाला भी हूँ । मुझमें सब ही शत्रुओं को परास्त कर डालने की असीम शक्ति है- प्रत्येक दिशा में ।

अन्त में आकर यहीं यह भी तो सोचने का विषय है कि जैसी वीरता इस वेदमन्त्र में वर्णित है वैसी ही वीरता उस आजाद के व्यक्तित्व में थी । पर थी भी क्यों ? उनमें ऐसी ही वीरता इसीलिए थी क्योंकि वे भारत की उसी बलिदानी मिट्टी में तो उत्पन्न हुए थे जिसने विदेशी विधर्मी मुगल साम्राज्य से लोहा लेनेवाले राणा प्रताप, शिवाजी, बन्दा वैरागी, और गुरु गोविन्द सिंह जैसे वीरों को उत्पन्न किया था । भारत की मिट्टी का कण-कण ऐसे ही वीरों के चरणों की पावन रज से आज भी अपने आप को केवल पावन पुनीत ही नहीं अपितु धन्य भी मानता है । श्री चन्द्रशेखर आजाद भी ऐसे ही वीरों की श्रेणी में आनेवाले अनुपम ओजस्वी वीर थे भारत की वीर परम्परा में वे एक नया ही अध्याय लिखकर गये जो स्वाधीनता आदोलन के इतिहास में मजबूती से जुड़ा हुआ है । इतना ही नहीं, आजाद अध्याय स्वाधीनता संघर्ष में लिखा देश उस पर सदा ही अभिमान करेगा । नमन, वहुसंख्य नमन उस वीरात्मा आजाद को ! जो जीते-जी फिरंगियों के हाथ न आया ! नमन उस वीर माता जगरानी देवी को भी जिसने चन्द्रशेखर आजाद जैसी वीर सन्तान उत्पन्न करके राष्ट्र को समर्पित की । परलोकवासी माता आज भी अपने चन्द्रशेखर की वीरता को याद करके अवश्य कहीं प्रसन्न हो रही होगी, क्योंकि- सुतविक्रमे सति नन नन्दति का खल वीरसूः ॥

(कुमार. १२.५९)

वीर सन्तान उत्पन्न करनेवाली माता अपने वेटे की बहादुरी देखकर प्रसन्न होती ही है ।

**आजादी लोगों को भीख में नहीं मिलती**  
आजादी दुश्मन से लड़कर नी जाती है,  
जिन राहों पर छिड़का जाता है गर्म लहू  
उन राहों पर चल कर आजादी आती है।

# “महर्षि दयानन्द की कुछ उपयोगी बातें”

- खुशहालचन्द्र आर्य

१. जब मनुष्य उत्तम गुणों से युक्त होता है, तब सब लोग सब प्रकार से उसका सम्मान करते हैं।
  २. जो जितना अपराध करे, उसको उतना दण्ड और जो जितना अच्छा काम करे, उसको उतना ही पारितेपिक देना। अधिक या न्यून नहीं, चाहे माता-पिता भी क्यों नहीं।
  ३. जब बुरे, बुराई नहीं छोड़ते तो भले भलाई क्यों छोड़े।
  ४. दुष्ट दुर्व्यवहारों में फँस जाने से मर जाना अच्छा है।
  ५. अपने अंश को न छोड़े और पराये अंश को कभी रखीकार न करें।
  ६. हारे हुए शत्रु को प्रतिष्ठा कभी न करे, किन्तु उसका यथार्थ्य मान्य रखे। परन्तु उसके छोड़कर स्वतन्त्रता कदाचित न देवें। जैसे पृथ्वीराज चौहान ने, मोहम्मद गोरी को कई बार छोड़कर अपने ही पैरों पर कुलहाड़ी मारी।
  ७. अपराध में जनता से राजपुरुषों पर अधिक दण्ड होना चाहिए/क्योंकि बकरी के प्रमाद रोकने से सिंह का प्रमाद रोकने में अधिक प्रयत्न होना उचित है।
  ८. सर्वदा सन्तानों की शिक्षा में धन का व्यय करें किन्तु विवाह, मृत्यु, आदि में न करें।
  ९. यह निश्चय है कि जैसा शीत आचरण और पुरुषार्थ प्रधान पुरुष करता है, वैसा ही इतर जन वर्तते हैं।
  १०. जितना कुछ व्यवहार संसार में है, उसका आधार गृहस्थाश्रम है। ब्रह्मचारी, वानग्रस्थ और सन्यासी तीन आश्रमों की दान और अन्नादि से के प्रतिदिन गृहस्थ ही धारण करता है, इससे गृहस्थ ज्येष्ठ व भ्रेष्ठ आश्रम है।
  ११. विद्वानों का यही काम है कि सत्या सत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण, असत्य का त्याग करके, परम् आनन्दित होते हैं। वे ही गुणग्राहक पुरुष विद्वान होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप फलों को प्राप्त होकर प्रसन्न रहते हैं।
  १२. जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनाए हैं, वैसे वेद भी सब के लिए सृष्टि के आदि में चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगीरा थे उनके मुख से चार वेद जिनके नाम ऋवेद, यजुर्वेद, सामवेद
  - व अर्थव वेद है, क्रमशः उच्चारित करवाये हैं। जिसको पढ़ने-पढ़ाने से कुछ भी न आवे, वह निर्बुद्धि और मूर्ख होने से शूद्र कहलाता है। मनुष्य के तीन शत्रु होते हैं, प्रथम-अज्ञान, द्वितीय-अन्याय तृतीय अभाव। इन तीन शत्रुओं को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अपने-अपने कार्यों से पराजित करते हैं। जो इन तीनों कार्यों को नहीं कर सकता, उसको इन तीनों वर्णों की सेवा करने का भार सौंपा है जिससे ये तीनों वर्ण अपने-अपने कर्म को आसानी से कर सकें/वैसे अन्य धार्मिक व सामाजिक कार्यों के करने का शुद्र को भी समान अधिकार है।
  १३. संसार में जितने दान हैं अर्थात् जल, अन्न, गौ, पृथ्वी, वस्त्र, तिल, सुवर्ण और घृत आदि इन सब दानों में वेद विद्या का दान सर्व श्रेष्ठ है।
  १४. जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं, तभी तक राज्य बढ़ता है और जब दुष्टाचारी होते हैं, तब नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।
  १५. जो-जो बुद्धि का नाश करनेवाले पदार्थ हैं, उनका सेवन कभी न करें, जैसे अनेक प्रकार से मद्य, भांग, गांजा, अफिम आदि।
  १६. जो मनुष्य नित्य प्रातः और साथं सञ्च्योपासना नहीं करता, उसको शूद्रकुल में रख देना चाहिए।
  १७. भारत की सब से बड़ी सम्पत्ति उसकी आध्यात्मिक निधि है, अतः सब कुछ खोलकर भी उसकी रक्षा अनिवार्य है।
  १८. जिसके शरीर में वीर्य सुरक्षित रहता है, तब उसको आरोग्य, बुद्धि, वल, पराक्रम बढ़के बहुत सुख की प्राप्ति होती है।
  १९. वे माता और पिता अपनी सन्तानों के पूर्ण वैरी हैं, जिन्होंने इनको विद्यादि प्राप्ति नहीं कराई।
  २०. जो आकाश के समान व्यापक, सब देवों का देव परमेश्वर है, उसको जो मनुष्य न जानते न मानते और उसका ध्यान नहीं करते, वे नास्तिक, मन्दमति व सदा दुःख-सागर में डूबे ही रहते हैं।
  २१. बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निशंकता और आनन्दोत्साह उठता है, वह जीव को आत्मा की ओर से नहीं, परमात्मा की ओर से है।
  २२. यह निश्चय है कि जितनी विद्या और मत
२३. बूगोल में फैले हैं, वे सब आर्यवर्त देश से ही प्रचलित हैं।
  २४. ब्रह्मचर्य जो कि सब आश्रमों का मूल है, उसके ठीक-ठीक सुधारने से सब आश्रम सुगम होते हैं और विगड़ने से विगड़ जाते हैं।
  २५. धर्म के नाम से बदला लेने की भावना अभद्र है।
  २६. परोपकार और परहित करते समय अपना मान-अपमान और पराई निन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है। इसके बिना सुधार नहीं हो सकता।
  २७. जो मनुष्य जगत का जितना उपकार करेगा, उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा।
  २८. “सुनने और प्रश्नोत्तर होने के पश्चात् सज्जनों को यही योग्य है कि सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करके स्वयं सदा आनन्दित होकर सब को आनन्दित किया करें।”
  २९. सर्वदा सत्य कि विजय और असत्य कि पराजय और सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ़ निश्चय के अवलम्बन से आप सब परोपकार करने से उदासीन होकर कभी सत्यार्थ प्रकाश करने से नहीं हटते।
  ३०. सीधा मार्ग वही होता है जिसमें सत्य मानना, सत्य बोलना, सत्य करना, पक्षपातरहित न्याय, धर्म का आचरण करना आदि है और इससे विपरीत का त्याग करना।
  ३१. उपासना शब्द का अर्थ समीपस्थ होना है। अष्टांग योग से परमात्मा के समीपस्थ होने और उसको सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी रूप से प्रत्यक्ष करने के लिए काम करना होता है, वह सब करना चाहिए। यह लेख मैंने अति उपयोगी व उत्तम समझकर श्री अत्तरसिंहजी आर्य “क्रान्तिकारी” (प्रधान हरियाणा आर्य युवक परिषद) द्वारा लिखित “महापुरुषोंकी दृष्टि में दयानन्द व महर्षि के सत्य उपदेश नामक शीर्षक पुस्तक से उद्धृत किया है। यह पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर महर्षि के समस्त विचारों को प्रकट करती है। इतनी उपयोगी पुस्तक को लिखने के लिए मैं “श्री क्रान्तिकारी” जी को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ साथ ही पाठकों से विनम्र निवेदन करता हूँ कि वे इस लेख को खूब मन लगाकर पढ़ें ताकि मेरा तथा “श्रीक्रान्तिकारीजी” का परिश्रम सफल हो सके।

# पर्यावरण प्रदूषण

## Environmental pollution

पर्यावरण को प्रत्यक्ष अथवा परोक्षरूप से प्रदूषित करने वाला प्रक्रम (चतुर्व. बमे) जिसके द्वारा पर्यावरण (स्थल, जल अथवा वायुमंडल) का कोई भाग इतना अधिक प्रभावित होता है कि वह उसमें रहने वाले जीवों (या पादपों) के लिए अस्वास्थ्यकर, अशुद्ध, असुरक्षित तथा संकटपूर्ण हो जाता है अथवा होने की संभावना होती है। पर्यावरण प्रदूषण सामान्यतः मनुष्य के इच्छित अथवा अनिच्छित कार्यों द्वारा पारिस्थितिक तंत्र में अवाक्षित एवं प्रतिकूल परिवर्तनों के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है जिससे पर्यावरण की गुणवत्ता में क्षस होता है और वह मनुष्यों, जीवों तथा पादपों के लिए अवाक्षित तथा अहितकर हो जाता है। पर्यावरण प्रदूषण को दो प्रेधान वर्गों में रखा जा सकता है:- १. भौतिक प्रदूषण जैसे स्थल प्रदूषण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण आदि, और २. मानवीय प्रदूषण जैसे सामाजिक प्रदूषण, राजनीतिक प्रदूषण, जातीय प्रदूषण, धार्मिक प्रदूषण, आर्थिक प्रदूषण आदि। सामान्य अर्थों में पर्यावरण प्रदूषण का प्रयोग भौतिक प्रदूषण के संदर्भ में किया जाता है।

आधुनिक परमाणु, औद्योगिक, श्वेत एवं हरित-क्रान्ति के युग की अनेक उपलब्धियों के साथ-साथ आज के मानव को प्रदूषण जैसी विकराल समस्या का सामना करना पड़ रहा है। वायु जिसमें हम साँस लेते हैं, जल, जो जीवन का भौतिक आधार है एवं भोजन जो ऊर्जा का स्रोत है- ये सभी प्रदूषित हो गए हैं। प्रसिद्ध पर्यावरण वैज्ञानिक इ.पी. ओडम (E-P-Odum) ने प्रदूषण (pollution) को निम्न शब्दों में परिभाषित किया है-

"Pollution is an undesirable change in the physical, chemical or biological characteristics of air] water and land (प. म., environment) that will be, or may be, harmful to human & other life, industrial

processes, living condition and cultural assets.

अर्थात्- प्रदूषण का तात्पर्य वायु, जल या भूमि (अर्थात् पर्यावरण) की भौतिक, रसायन या जैविक गुणों में होने वाले ऐसे अनचाहे परिवर्तन हैं जो मनुष्य एवं अन्य जीवधारियों, उनकी जीवन परिस्थितियों, औद्योगिक प्रक्रियाओं एवं सांस्कृतिक धरोहरों के लिये हानिकारक हों।

Pollution शब्द के ग्रीक मूल का शाव्विक अर्थ है defilement अर्थात् दूषित करना, भ्रष्ट करना। प्रदूषणकारी वस्तु या तत्व को प्रदूषक (pollutant) कहते हैं। कोई भी उपयोगी तत्व गलत मात्रा में गलत स्थान पर होने से वह प्रदूषक हो सकता है। उदाहरणार्थ, जीवधारियों के लिये नाइट्रोजन एवं फास्फोरस आवश्यक तत्व है। इनके उर्वरक के रूप में उपयोग से फसल-उत्पादन तो बढ़ता है किन्तु जब ये अधिक मात्रा में किसी-न-किसी तरह से नदी या झील के जल में पहुँच जाते हैं तो अत्यधिक काई पैदा होने लगती है। आवश्यकता से अधिक शैवालों के पूरे जलाशय में एवं जल-सतह पर जमा होने से जल-प्रदूषण होने की स्थिति बन जाती है। प्रदूषक सदैव व्यर्थ पदार्थ के रूप में ही नहीं होते। कभी-कभी एक स्थिति को सुधारने वाले तत्व का उपयोग दूसरी स्थिति के लिये प्रदूषणकारी हो सकता है। प्रदूषक पदार्थ प्राकृतिक इकोतंत्र से तथा मनुष्य द्वारा की जाने वाली कृषि एवं औद्योगिक गतिविधियों के कारण उत्पन्न होते हैं।

प्रकृति-प्रदत्त प्रदूषक पदार्थों का प्राकृतिक तरीकों से ही उपचार हो जाता है, जैसा कि पदार्थों के चक्रों में आप पढ़ चुके हैं। किन्तु मनुष्य की कृषि या औद्योगिक गतिविधियों से उत्पन्न प्रदूषक पदार्थों के लिये न तो प्रकृति में कोई व्यवस्था है एवं न ही मनुष्य उसके उपचार हेतु पर्याप्त प्रयत्न कर

पा रहा है। फलस्वरूप, बीसवीं सदी के इन अन्तिम वर्षों में मनुष्य को एक प्रदूषण युक्त वातावरण में रहना पड़ रहा है। यद्यपि हम वातावरण को शत-प्रतिशत प्रदूषणमुक्त तो नहीं कर सकते, किन्तु ऐसे प्रयास तो कर ही सकते हैं कि वे कम-से-कम हानिकारक हों। ऐसा करने के लिये प्रत्येक मनुष्य को पर्यावरण-संरक्षण को उतनी ही प्राथमिकता देनी होगी जितनी कि अन्य भौतिक आवश्यकताओं को वह देता है।

विषय सामग्री (इन्हें भी पढ़ें)

१ पर्यावरण प्रदूषण Environmental pollution

२ पर्यावरण प्रदूषण (Environment Pollution)

३ पर्यावरण प्रदूषण : नियंत्रण एवं उपाय

४ पर्यावरण प्रदूषण : प्रकार, नियंत्रण एवं उपाय

५ पर्यावरण, प्रदूषण एवं आकस्मिक संकट

६ पर्यावरण प्रदूषण : कानून और क्रियान्वयन

७ पर्यावरण प्रदूषण एवं उद्योग

८ पर्यावरण-प्रदूषण और हमारा दायित्व प्रदूषकों के प्रकार (Types of Pollutants)

प्रदूषक पदार्थ तीन प्रकार के हो सकते हैं-

(अ) जैव निम्नीकरणीय या बायोडिग्रेडेबल प्रदूषक- (Biodegradable Pollutants)

जिन प्रदूषक पदार्थ का प्राकृतिक क्रियाओं से अपघटन (decompose) होकर निम्नीकरण (डिग्रेशन) होता है, उन्हें बायोडिग्रेडेबल प्रदूषक कहते हैं। उदाहरणार्थ, घरेलू क्रियाओं से निकले जल-मल (domestic sewage) का अपघटन सूक्ष्मजीव करते हैं। इसी प्रकार मेटाबोलिक क्रियाओं के उपोत्पाद (by products) जैसे CO<sub>2</sub>, नाइट्रोट्रस एवं

तापीय प्रदूषण (जीमतउंस चवससन. जपवद) से निकली ऊष्मा आदि का उपचार प्रकृति में ही इस प्रकार से हो जाता है कि उनका प्रभाव प्रदूषक नहीं रह जाता।

(ब) अनिम्नीकरणीय या नहन-डिग्रेडेबल प्रदूषक (Non & biodegradable Pollutants)

ये प्रदूषक पदार्थ होते हैं जिनका प्रकृति में प्राकृतिक विधि से निम्नीकरण नहीं हो सकता। प्लास्टिक पदार्थ, अनेक रसायन, लम्बी शृंखला वाले डिटर्जेंट (long chain detergents) काँच, अल्युमि नियम एवं मनुष्य द्वारा निर्मित असंख्य कृत्रिम पदार्थ (synthetic material) इसी श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं। इनका हल दो प्रकार से हो सकता है- एक तो इनका पुनः उपयोग अर्थात् पुनर्चक्रण (recycling) करने की तकनीकों का विकास तथा दूसरे इनकी अपेक्षा वैकल्पिक डिग्रेडेबल पदार्थों का उपयोग।

(स) विषैले पदार्थ

इस श्रेणी में भारी धातुएँ (पारा, सीसा, कैडमियम आदि) धूमकारी गैसें (smog gases), रेडियोधर्मी पदार्थ, कीटनाशक (insecticides) एवं ऐसे अनेक कृषि एवं औद्योगिक बहिःस्राव (effluents) आते हैं जिनकी विषाक्तता के बारे में अभी जानकारी नहीं है। इस श्रेणी के अनेक प्रदूषकों का एक विशेष गुण होता है कि ये आहार-शृंखला में प्रवेश करने के पश्चात हर स्तर पर सांद्रित (बवदबमदजतंजम) होते जाते हैं। इस श्रेणी के प्रदूषक वास्तव में मानव एवं अन्य जीवधारियों के स्वास्थ्य के लिये अत्यधिक हानिकारक हैं।

प्रदूषण के प्रकार-Types of pollution

उपरोक्त प्रकार के प्रदूषक तथा उनि जैसे अन्य कारणों से उत्पन्न प्रदूषण मुख्य रूप से निम्न प्रकार के होते हैं-

(१) जल-प्रदूषण

(२) वायु- प्रदूषण

(३) महानगरीय प्रदूषण

(४) रेडियोधर्मी-प्रदूषण

(५) शोर-प्रदूषण

इनमें से पाठ्यक्रमानुसार जल, वायु एवं मृदा-प्रदूषण का अध्ययन करेगे।

जल-प्रदूषण (Water Pollution)

'जल के बिना जीवन सम्भव नहीं' दृ यह वाक्य ही जल के महत्व को पर्याप्त रूप से दर्शाता है। दुर्भाग्य से आज हम शुद्ध पेयजल को तरस रहे हैं। जल-प्रदूषण अशुद्धियों की जानकारी दी जा रही है।

जल में उपस्थिति अपद्रव्य पदार्थों को निम्न श्रेणियों में विभक्त किया जाता है-

(अ) निलम्बित अपद्रव्य (Suspended impurities)

इन पदार्थों के कण से अधिक व्यास के होते हैं। इन्हें छानकर अलग किया जा सकता है। रेती, मिट्टी, खनिज-लवण, शैवाल, फफूँद एवं विविध अजैव पदार्थ इस श्रेणी के अपद्रव्य पदार्थ हैं। इनकी उपस्थिति से जल मटमैला दिखता है।

(ब) कोलहाइडी अपद्रव्य (Colloidal impurities)

इन अपद्रव्य पदार्थों के कण कोलहाइड रूप में होते हैं। ये कण अतिसूक्ष्म होते हैं। (एक मिली माइक्रोन से एक माइक्रोन के बीच) अतः इन्हें छानकर अलग करने सम्भव नहीं होता। जल का प्राकृतिक रंग इन्हीं के कारण दिखता है। सिलिका एवं विभिन्न धातुओं के अहक्साइड (जैसे- । आदि) वैकटीरिया आदि इसी श्रेणी के अपद्रव्य हैं।

(स) धुलित अशुद्धियाँ (व्येवसायमक पउचनतपजपमे)

प्राकृतिक जल जब विभिन्न स्थानों से बहता है तो उसमें अनेक ठोस, द्रव एवं गैस धुल जाती हैं। जल में धुलित ठोस पदार्थों की सान्द्रता को पीपीएम (चचउ-चंतज चमत उपससपवद) इकाई में मापा जाता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पेयजल हेतु कुछ मानक निर्धारित किये हैं। यदि किसी जल में उक्त पदार्थों की मानक मात्रा से अधिक है तब उसे प्रदूषित जल कहेंगे।

जल-प्रदूषण के स्रोत (Sources of water Pollution)

जल प्रदूषण के दो प्रमुख स्रोत होते हैं-

(अ) प्राकृतिक स्रोत- प्राकृतिक रूप से भी जल का प्रदूषण होता रहता है। इसका कारण भू-क्षरण, खनिज-पदार्थ पौधों की पत्तियाँ, धूमस तथा जन्तुओं के मलमूत्र का जल के प्राकृतिक स्रोतों में मिलना है। यह प्रदूषण बहुत धीमी गति से होता है किन्तु अवर्धा की स्थिति में जलाशयों में कम पानी रहने पर इनके दुष्प्रभाव गम्भीर हो सकते हैं।

जल में कुछ विषैली धातुएँ भी धुली होती हैं- आर्सेनिक, सीसा, कैडमियम, पारा, निकल, बेरीलियम, कोबाल्ट, महलीडेनम, टिन, वैनेडियम ऐसी ही धातुएँ हैं।

(ब) मानवीय स्रोत- मानव द्वारा जल-प्रदूषण निम्न कारणों से होता है-

१. घरेलू बहिःस्राव (Domestic effluents)

घरेलू कार्यों में उपयोग किया जल अन्य अपशिष्ट पदार्थों के रूप में बहिःस्राव (effluent) के रूप में बहा दिया जाता है। इस बहिःस्राव में सड़े फल, तरकारियाँ, चूल्हे की राख, कूड़ा-करकट, डिटर्जेंट पदार्थ आदि होते हैं। इनमें से डिटर्जेंट पदार्थ जिन रसायनों से बने होते हैं उनका जल में उपस्थित वैकटीरिया भी निम्नीकरण (degradation) नहीं कर पाते। अतः इन पदार्थों का प्रभाव स्थायी होता है।

२. वाहित मल (Sewage)

जल-प्रदूषण का यह सबसे बड़ा स्रोत माना जाता है। इसमें मानव के मलमूत्र का समावेश होता है। अदि तकांश स्थानों पर ये पदार्थ बिना उपचारित किये ही नदी, नालों या तालाबों में बहा दिये जाते हैं। वाहित मल में कार्बनिक एवं अकार्बनिक दोनों प्रकार के पदार्थ होते हैं। कार्बनिक पदार्थों की अधिकता से विभिन्न सूक्ष्म जीव, जैसे-वैकटीरिया, वायरस, अनेक एक कोशिकीय पौधे एवं जन्तु, फफूँद आदि तीव्रता से वृद्धि करते हैं, एवं वाहित मल के साथ पेयजल स्रोतों में मिल जाते हैं।

उल्लेखनीय है कि मनुष्य की आँत में रहने वाले ई. कोलाई बैक्टीरिया की जल में उपस्थिति को जल-प्रदूषण का सूचक माना जाता है।

### ३. औद्योगिक बहिःस्राव (Industrial effluents)

उद्योगों के जो संयंत्र लगाए जाते हैं उनमें से अधिकांश में जल का प्रचुर मात्रा में उपयोग होता है। प्रत्येक उद्योग में उत्पादन प्रक्रिया के उपरान्त अनेक अनुपयोगी पदार्थ शेष बचते हैं। ये पदार्थ जल के साथ मिलकर बहिःस्राव के रूप में निष्कासित कर समीप की नदी या अन्य जलस्रोत में बहा दिये जाते हैं।

औद्योगिक बहिःस्राव में अनेक धात्विक तत्व तथा अनेक प्रकार के अन्त्ल, क्षार, लवण, तेल, वसा आदि विषैले पदार्थ होते हैं जो जल-प्रदूषण कर देते हैं। लुगदी तथा कागज-उद्योग, शकर-उद्योग, कपड़ा उद्योग, चमड़ा उद्योग, मट्ट-निर्माण, औषधि-निर्माण, रसायन-उद्योग एवं खाद्य-संसाधन उद्योगों से विभिन्न प्रकार के अपशिष्ट पदार्थ बहिःस्राव (effluent) के रूप में नदी नालों में बहाए जाते हैं।

इन प्रदूषक पदार्थों से जल दुर्गन्धयुक्त एवं गन्दे स्वाद वाला हो जाता है। इनमें से कुछ अपशिष्ट पदार्थ ऐसे भी होते हैं जो पेयजल शोधन में उपयोग में ली जाने वाली क्लोरीन के साथ मिलकर ऐसे यौगिक बना देते हैं जिनका स्वाद एवं गन्ध मूल पदार्थ से भी अधिक खराब होता है।

कुछ विषैली धातुएँ जैसे आर्सेनिक खदानों से वर्षा के जल के साथ मिलकर जलस्रोत में मिल जाती हैं। औद्योगिक बहिःस्राव में सर्वाधिक खतरा पारे से होता है। पारे के धातक प्रभाव का सबसे बड़ा उदाहरण जापान की मिनिमेटा (उपदपउंज) खाड़ी के लोगों को १६५० में हुई एक भयानक बीमारी है। रोग का नाम भी मिनिमेटा रखा गया। खोज करने पर विदित हुआ है कि ये लोग जिस स्थान की मछलियों को खाते थे उनके शरीर में पारे की उच्च सान्द्रता पाई गई। इस खाड़ी में

एक प्लास्टिक कारखाने से पारे का बहिःस्राव होता था।

### ४. कृषि बहिःस्राव (Agricultural effluents)

आजकल अपनाई जाने वाली कृषि प्रणालियों को दोषपूर्ण तरीके से उपयोग में लेने से मृदा-क्षरण होता है, फलस्वरूप मिट्ठी पेयजल में लाकर उसे गन्दा करती है। इसके अलावा अत्यधिक रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशकों के प्रयोग से कृषि बहिःस्राव में अनेक ऐसे पदार्थ होते हैं जो पेयजल में मिलने से उसे प्रदूषित करने में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में सहायक होते हैं।

अधिकांश उर्वरकों में नाइट्रोजन एवं फहस्फोरस होता है। अधिक मात्रा में जलाशयों में पहुँचने पर ये शैवाल उत्पन्न करने में सहायक होते हैं। अत्यधिक शैवाल जमा होने से जल पीने योग्य नहीं रह पाता तथा उनके अपशिष्टक बैक्टीरिया की संख्या भी अत्यधिक हो जाती है। इनके द्वारा की जाने वाली अपघटन क्रिया से जल में अहक्सीजन की मात्रा घटने लगती है एवं जल प्रदूषित हो जाता है।

कीटनाशकों एवं खरपतवारनाशकों के रूप में उपयोग में लिये जाने वाले रसायन पारा, क्लोरीन, फ्लोरिन, फहस्फोरस जैसे विषैले पदार्थों से बने होते हैं। ये पदार्थ निम्न प्रकार से कार्बनिक एवं अकार्बनिक रसायनों से बनते हैं-

अ) अकार्बनिक- (१) आर्सेनिक यौगिक (२) पारे के यौगिक एवं (३) गंधक के यौगिक

(ब) कार्बनिक- (१) पारा या क्लोरीन युक्त हाइड्रोकार्बन एवं (२) तांबा, फहस्फोरस के कार्बो-धात्विक यौगिक।

कुछ कीटनाशक पदार्थ जो जल में मिल जाते हैं, जलीय जीवधारियों के माध्यम से विभिन्न पोषी-स्तरों में पहुँचते हैं। प्रत्येक स्तर पर जैविक क्रियाओं से इनकी सान्द्रता में वृद्धि होती जाती है। इस क्रिया को जैविक-आवर्दध (biomagnification) कहते हैं।

### ५. तैलीय-प्रदूषण (Oil Pollution)

यह प्रदूषण नदी-झीलों की अपेक्षा

समुद्रीजल में अधिक होता है। समुद्री जल का तैलीय प्रदूषण निम्न कारणों से होता है-

(१) जलायनों द्वारा अपशिष्ट तेक के विसर्जन से।

(२) तेल वाहक जलायनों की दुर्घटना से।

(३) तेल वाहक जलायनों में तेल चढ़ाते या उतारते समय।

(४) समुद्र किनारे खोदे गए तेल कुओं से लीकेज के कारण।

जल-प्रदूषण के दुष्प्रभाव (Harmful effects of water pollution)

(अ) मनुष्य पर प्रभाव

(ब) जलीय वनस्पति पर प्रभाव

(स) जलीय जन्तुओं पर प्रभाव

(द) विविध प्रभाव

(अ) मनुष्य पर प्रभाव - Effects on Humans

(१) पेयजल से- प्रदूषित जल के पीने से मनुष्य के स्वास्थ्य पर अनेक हानिकारक प्रभाव होते हैं। प्रदूषित जल में अनेक सूक्ष्म जीव होते हैं जो विभिन्न प्रकार के रोगों के या तो कारण बनते हैं या रोगजनक का संचरण करते हैं। प्रदूषित जल से होने वाले रोग निम्नानुसार हैं-

बैक्टीरिया जनित- हैजा, टाइफहाइड, डायरिया, डिसेन्ट्री आदि।

वाइरस जन्य- पीलिया, पोलियो आदि।

प्रोटोजोआ जन्य- पेट तथा आँत सम्बन्धी अनेक विकार जैसे- अमीबिक डिसेन्ट्री, जिएर्डिसिस आदि।

कृमि जन्य-

आँत के कुछ परजीवी जैसे एस्क्रेसिस का संक्रमण पेयजल के द्वारा ही होता है। नारू के कृमि भी पेयजल में उपस्थित साइक्लोप्स के कारण मनुष्य में पहुँचते हैं।

(२) जल-सम्पर्क से- प्रदूषित जल के शरीर-सम्पर्क होने पर अनेक रोग-कारक परजीवी मनुष्य के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। या फिर रोगी मनुष्य के शरीर से निकलकर जल में मिल जाते हैं। नारू इसका एक उदाहरण है।

(3) जलीय रसायनों से- जल में उपस्थित अनेक रासायनिक पदार्थों की आवश्यकता से अधिक मात्रा में से स्वास्थ्य पर अनेक प्रभाव होते हैं।

(ब) जलीय वनस्पति पर प्रभाव - Effects on aquatic vegetation

प्रदूषित जल से जलीय वनस्पति पर निम्न प्रभाव होते हैं-

(i) बहिःस्रावों में उपस्थित अधिक नाइट्रोजन एवं फास्फोरस से शैवाल में अतिशय वृद्धि होती है। सतह पर अधिक मोटी काई के कारण सूर्य-प्रकाश अधिक गहराई तक नहीं पहुँच पाता।

(ii) प्रदूषित जल में अन्य सूक्ष्मजीवों की संख्या बढ़ती है। ये सूक्ष्म जीव समूह में एकत्रित हो जाते हैं, जिन्हें मल-कवक (मूँहम निदहन) के रूप में जाना जाता है।

(iii) प्रदूषक तत्व धीरे-धीरे तलहटी पर जमा होते जाते हैं, फलस्वरूप जड़ वाले जलीय पौधे समाप्त होते जाते हैं एवं जलीय खरपतवार (जल हायसिंथ, जलीय फर्न, जलीय लेट्यूस आदि में वृद्धि होती है।

(iv) तापीय प्रदूषण से जल का तापमान बढ़ता है जिससे प्लवक एवं शैवालों की वृद्धि होने से जलीय अहक्सीजन में कमी आती है।

(स) जलीय जन्तुओं पर प्रभाव - Effects on aquatic organisms

जलीय वनस्पति पर ही जलीय जन्तुओं का जीवन आधारित होता है। अतः जल-प्रदूषण से जलीय वनस्पति के साथ ही जलीय जन्तुओं पर भी प्रभाव होते हैं। संक्षेप में निम्न प्रभाव होते हैं-

(i) अहक्सीजन की कमी से अनेक जन्तु, विशेषकर मछलियाँ मरने लगती हैं। १९४० में जल के एक लीटर नमूने में सामान्यतया २.५ घन सेमी. अहक्सीजन होती थी, वही अब यह मात्रा घटकर ०.९ घन सेमी. रह गई है।

(ii) जन्तुओं में विविधता लगभग समाप्त हो जाती है। कुछ बैक्टीरिया खाने वाले जन्तु (जैसे-काल्पीडियम, ग्लाकोमा, काइरोनोमिड, टचूबफीट

आदि) ही बचे रहते हैं। निर्मल जल में पाये जाने वाले जन्तु प्रायः समाप्त हो जाते हैं।

(iii) कृषि एवं औद्योगिक बहिःस्राव में आने वाले अनेक रासायनिक पदार्थ न केवल जलीय जन्तुओं के लिये घातक होते हैं वरन् अन्य चौपायों (गाय, भैंस आदि) द्वारा उसे पीने पर उन पर घातक प्रभाव होते हैं।

(द) अन्य प्रभाव

(i) निलम्बित रासायनिक प्रदूषकों से जल गन्दा दिखता है।

(ii) जल बेस्वाद एवं दुर्गन्ध युक्त हो जाता है।

(iii) सुपोषण (Eutrophication)- घरेलू जल-मल (सीवेज), खाद्य पदार्थों से सम्बन्धित फैक्टरियों से निकले कार्बनिक व्यर्थ-पदार्थ एवं खेतों के ऊपर से बहकर आने वाला पोषक तत्वों से भरपूर जल जब जलाशयों में मिलता है तब उस जल की उर्वरकता में अतिशय वृद्धि होती है। इस कारण से उनमें जलीय शैवालों की इतनी वृद्धि होती है कि जलाशय की पूरी सतह शैवाल से ढँक जाती है। शैवाल आक्सीजन का भी उपयोग कर लेते हैं, फलस्वरूप जल में रहने वाले जन्तुओं (मछली, कीट आदि) को अहक्सीजन की कमी का सामना करना पड़ता है एवं उनकी मृत्यु हो जाती है। इधर शैवालों की वृद्धि से जलाशय सूखने लगते हैं।

(iv) जल में उपस्थित प्रदूषक तत्वों की वजह से जल एवं टंकियों में क्षरण होने लगता है।

(v) घरेलू बहिःस्राव में उपस्थित डिटर्जेन्ट पदार्थों के कारण जलाशयों के जलशोधन में कठिनाई आती है।

(vi) बाहित मल के विघटन से अनेक ज्वलनशील पदार्थ बनते हैं। जिससे कभी-कभी भूमिगत नालियों में विस्फोट होते हैं।

(vii) खरपतवार में वृद्धि से जलाशय के विभिन्न उपयोगों में (जैसे- मछली पकड़ना, सिंचाई, नौका-विहार आदि) में बाधा होती है।

किसी नदी में मिलने वाले बहिःस्राव

का मिलने के स्थान के नीचे की धारा (कवृद्धे जतमंत) तक बहते-बहते उनमें उपस्थित कार्बनिक प्रदूषकों के द्वारा होने वाले भौतिक, रासायनिक एवं जैविक प्रभावों को साथ में दिये रेखाचित्र ४.९ में देखें। इस ग्राफ-चित्र में क्षेत्रज-अक्ष नीचे की धारा की दूरी प्रदर्शित करता है। जैसे जल नीचे की धारा की ओर बढ़ता है उसमें बैक्टीरिया एवं काइरोनहमस लार्वा जैसे जीवों की संख्या घटती जाती है तथा आक्सीजन की मात्रा बढ़ती जाती है। किसी जल की शुद्धता नापने के लिये BOD इकाई का उपयोग होता है जिसका मतलब ठपव बीमउपबंस वस्त्रलहमद कमउंदक है। इस चित्र में यह भी देख सकते हो कि ठब्ब भी निरन्तर घटता जाता है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा औद्योगिक तथा नगरीय घटता जाता है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा औद्योगिक तथा नगरीय अपशिष्ट जल को प्राकृतिक सतही जल में छोड़ने के लिये एक सीमा निर्धारित की है जो कि ९० चचरा से कम होनी चाहिए।

जल-प्रदूषण की रोकथाम एवं नियंत्रण - Water pollution prevention and control

जल-प्रदूषण की रोकथाम के लिये जल-उपचार एवं जल का पुनर्चक्रण (recycling) किया जाना चाहिए।

अपशिष्ट जल का उपचार - Waste Water Treatment

बाहित जल एवं औद्योगिक बहिःस्रावों को जलस्रोतों में बहाने से पहले ही साफ किया जाना चाहिए। अपशिष्ट जल के प्राथमिक एवं द्वितीयक उपचार से अनेक प्रदूषक पृथक किये जा सकते हैं। प्राथमिक उपचार-किया में सूक्ष्म-जीवों की गतिविधियों से व्यर्थ पदार्थों का अपघटन एवं अहक्सीकरण किया जाता है।

जल का रिसाइक्लिंग-Water recycling

जल प्रदूषण को रोकने के लिये यह एक अच्छा उपाय है। प्रदूषित जल में उपस्थित अनेक प्रदूषक तत्वों, अपशिष्ट पदार्थों की रिसाइक्लिंग की जा सकती

है। इन उपोत्पादों का उचित उपयोग भी किया जाता है। गोबर गैस प्लान्ट इसका एक उदाहरण है। व्यर्थ पदार्थों को पुनः उपयोग का उदाहरण नारियल रेशे एवं कृषि अपशिष्ट पदार्थों का पेपर मिलों में उपयोग करना है।

#### वायु-प्रदूषण (Air Pollution)

-वायुमण्डल में ७८ प्रतिशत नाइट्रोजन, २०-२१ प्रतिशत आक्सीजन, ०.०३ प्रतिशत कार्बन डाइआक्साइड तथा बहुत सूक्ष्म मात्रा में अन्य गैसें एवं वाष्ण रूप में जल होता है। इस वायुमण्डल में कोई भी अन्य पदार्थ के मिलने पर यदि उसका हानिकारक प्रभाव होता है, तब उसे वायु-प्रदूषण कहेंगे। वायुमण्डल में उपरोक्त गैसों का अनुपात इन गैसों के चक्र के द्वारा बना रहता है। किन्तु कृषि एवं औद्योगिक गतिविधियों से अनेक गैसों की अतिरिक्त मात्रा वायुमण्डल में जा मिलती है, फलस्वरूप वायु-प्रदूषण हो जाता है।

#### वायु-प्रदूषण के स्रोत (Sources of Air Pollution)

वायु-प्रदूषण के स्रोतों को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है-

##### (अ) प्राकृतिक स्रोत - Natural sources

ज्वालामुखी पर्वतों के फटने से निकले लावा के साथ निकली राख, आँधी-तूफान के समय उड़ती धूल तथा वर्नों में लगने वाली आग से वायु-प्रदूषण होता है। दलदली क्षेत्रों में होने वाली अपघटन क्रियाओं से निकली मीथेन गैस तथा वर्नों में पौधों से उत्पन्न हाइड्रोजन के विभिन्न यौगिकों तथा परागकणों से भी वायु प्रदूषित होती है।

किन्तु प्राकृतिक स्रोतों से होने वाले इस प्रदूषण का प्रभाव मनुष्य पर नगण्य ही है।

##### (ब) मानवीय स्रोतों - Human resources

मनुष्य द्वारा की जाने वाली अनेक गतिविधियाँ वायु-प्रदूषण की मुख्य स्रोत हैं। इन गतिविधियों की निम्न श्रेणी में विभक्त किया जा सकता है-

##### १. दहन-क्रियाएँ

२. औद्योगिक गतिविधियाँ
३. कृषि-कार्य
४. विलायकों का प्रयोग
५. परमाणु ऊर्जा सम्बन्धी गतिविधियाँ

##### ६. दहन-क्रियाएँ (Combustion)

मनुष्य की दैनिक आवश्यकताओं, जैसे-भोजन पकाना, वस्त्र, भवन-निर्माण सामग्री (इंट, सीमेंट, चूना आदि) आवागमन, वर्तन आदि को तैयार करने में आवश्यक ऊर्जा विभिन्न प्रकार के ईंधन के दहन (combustion of fuel) से प्राप्त होती है।

धरेलू कार्यों में दहन-क्रियाओं से जहाँ एक ओर  $\text{CO}_2$ ,  $\text{CO}$  (कार्बन मोनोक्साइड),  $\text{SO}_2$  जैसी गैसें उत्पन्न होती हैं, वहाँ इस क्रिया में वायुमण्डल की आक्सीजन उपयोग में ली जाती है। इससे वातावरण में आक्सीजन की कमी होती है। एक मोटे अनुमान के अनुसार एक टन तेल जलने के लिये १०,३०० घन मीटर, एक टन कोयले का दहन के लिये १,१५,०० घन मीटर तथा एक टन कुकिंग गैस के जलने में १५,६०० घन मीटर वायु आवश्यक होती है।

इसी प्रकार अनेक विद्युत-ग्रहों में पथर का कोयला जलाने से अन्य गैसें तथा धुँआ उत्पन्न होता है। कोयले की राख व्यर्थ पदार्थ के रूप में उड़कर वायुमण्डल में मिलती है। दिल्ली में इन्द्रप्रस्थ स्थित विद्युत तापगृह में प्रतिदिन ४५ लाख टन कालिख, ६० लाख टन  $\text{SO}_2$  एवं ८५ टन राख उत्पन्न होती है।

दहन-क्रियाओं में होने वाले प्रदूषण में सर्वाधिक हानि वाहनों के जलने वाले ईंधन से होती है। डीजल वाहनों के धुएँ में अनेक हाइड्रोकार्बन तथा सल्फर एवं नाइट्रोजन के अहवसाइड आदि होते हैं। पेट्रोल से चलने वाले वाहनों के धुएँ में ब्लैक अलावा सीसा ( $\text{Pb}$ ) भी होता है। आजकल सीसा रहित पेट्रोल उपलब्ध होने लगा है।

##### २. औद्योगिक गतिविधियाँ - Industrial activities

उद्योगों से निकलने वाले प्रदूषकों

की प्रकृति इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें लगने वाला कच्चा माल किस प्रकार का है तथा मुख्य उत्पादन के साथ उपोत्पाद क्या निकलते हैं। कपड़ा-उद्योग, रासायनिक-उद्योग, तेल-शोधक कारखाने, गत्ता-उद्योग एवं शक्कर-उद्योग, वायु-प्रदूषण के मुख्य स्रोत हैं।  $\text{H}_2\text{S} \cdot \text{SO}_2 \cdot \text{CO}_2 \cdot \text{CO}$  धूल, सीसा, एस्वेस्टस, आर्सेनिक, फ्लोराइड; वेरीलियम तथा अनेक हाइड्रोकार्बन पदार्थ इन उद्योगों से निकले मुख्य वायु-प्रदूषक हैं। औद्योगिक क्षेत्रों के आसपास इन्हाँ धुँआ होना है कि वहाँ साँस लेना दूभर हो जाता है एवं दूर की वस्तुएँ दिखाई नहीं पड़ती।

वायु-प्रदूषण की दृष्टि से हमारे देश में औद्योगिक शहर सर्वाधिक प्रदूषित हैं।

##### ३. कृषि-कार्य - agricultural operation

कृषि में निरन्तर भारी मात्रा में कीटनाशकों का उपयोग होता है। इनके छिड़काव में वायु-प्रदूषण होता है जिससे नेत्र तथा श्वसन-अंग प्रभावित होते हैं।

##### ४. विलायकों का प्रयोग (Use of Solvents)

आजकल प्रयुक्त होने वाले स्पेन्ट तथा फर्नीचर आदि की पहलिश बनाने में अनेक प्रकार के कार्बन उड़नशील विलायकों का प्रयोग होता है। विलायकों के सूक्ष्म कण वायु में मिलकर वायु प्रदूषित करते हैं।

##### ५. परमाणु ऊर्जा सम्बन्धी गतिविधियाँ - छनवसमंत चवूमत-तमसंजमक बजपअपजपमे

परमाणु ऊर्जा प्राप्त करने के लिये अस्थायी प्रकृति के रासायनिक तत्त्वों का उपयोग होता है। ये तत्व उत्पन्न होने के साथ-साथ विघटित होने लगते हैं। इसके फलस्वरूप रेडियोधर्मी गामा किरणों का विकिरण होता है। ये किरणें सभी जीवधारियों के लिये घातक होती हैं।

रेडियोधर्मी तत्व एटहमिक रिएक्टरों एवं बम विस्फोटों से निकलते हैं एवं वायु-प्रदूषित करते हैं।

## मुख्य वायु-प्रदूषक एवं उनके प्रभाव (Chief Air Pollutant & their effects)

उपरोक्त वर्णित विभिन्न स्रोतों से जो प्रदूषक निकलते हैं उनमें मुख्य हैं-

कार्बन डाइआक्साइड ( $\text{CO}_2$ ), कार्बन मोनो आक्साइड ( $\text{CO}$ ) सल्फर डाइआक्साइड ( $\text{SO}_2$ ), नाइट्रोजन के आक्साइड ( $\text{NO}$ )  $\text{NO}_2$ , एरोसोल्स (aerosols) स्मोग (smog) एवं एथीलिन आदि।

### १. कार्बन डाइआक्साइड ( $\text{CO}_2$ )

यह गैस अनेक प्रकार की दहन प्रक्रियाओं में निर्मित होती है। जन्तुओं एवं पौधों की श्वसन-क्रिया से भी  $\text{CO}_2$  निर्मुक्त होती है यद्यपि पौधों द्वारा की जाने वाली प्रकाश-संश्लेषण की क्रिया द्वारा वायुमण्डल की  $\text{O}_2$  एवं  $\text{CO}_2$  में निर्धारित अनुपात लगभग बना रहता है, किन्तु पिछले १०० वर्षों में औद्योगिक प्रक्रमों एवं स्वचालित वाहनों के कारण वायुमण्डल में  $\text{CO}_2$  की मात्रा में १५ प्रतिशत वृद्धि हो चुकी है। एक जेट वायुयान एटलांटिक महासागर को पार करने में वायुमण्डल की ३५ टन आक्सीजन का उपयोग करता है तथा ७० टन  $\text{CO}_2$  वायुमण्डल में छोड़ता है।

वायुमण्डल में  $\text{CO}_2$  की मात्रा बढ़ने से वातावरण के तापमान में वृद्धि होती है। यदि प्रदूषण की गति यही रही तो अनुमान है कि अगले कुछ वर्षों में २५ प्रतिशत की वृद्धि से पृथ्वी के तापमान में इतनी वृद्धि होगी कि दर्तीय प्रदेशों की बर्फ पिघलने लगेगी, फलस्वरूप समुद्री जल-सतह ६० फीट ऊँची हो जाएगी। इस कारण समुद्र किनारे के अधिकांश भू-भाग जलमग्न हो जाएंगे।

### २. कार्बन मोनो आक्साइड ( $\text{CO}$ )

ईंधन के अपूर्ण दहन से व्य बनती है। यह गैस स्टील उद्योगों, तेल-शोधक कारखानों, मोटर वाहनों तथा सिगरेट के धूएँ में होती है। यह अत्यन्त विषेश गैस है। साँस के द्वारा अन्दर ली गई यह गैस रक्त में RBC के हीमोग्लोबिन के साथ शीघ्र मिलकर श्वसन-क्रिया में रुकावट उत्पन्न करती

है। अधिक मात्रा में व्य का शरीर में प्रवेश होने से थकावट, आलस्य, सिरदर्द, दृष्टिदोष जैसे लक्षणों के साथ रक्त-परिवहन एवं तंत्रिका-तंत्र भी प्रभावित होते हैं।

### ३. सल्फर डाइआक्साइड ( $\text{SO}_2$ )

अनेक प्रकार के उद्योगों जहाँ  $\text{Cu}$   $\text{Zn}$   $\text{Pb}$ ] छप एवं थ म अयस्कों (ores) का उपयोग होता है, इन तत्वों में उपस्थित सल्फर के आक्सीकरण से  $\text{SO}_2$  निकलती है जो वायुमण्डल में मिल जाती है। इसके अलावा मोटर वाहनों, कोयले के दहन एवं तेलशोधक कारखानों से भी  $\text{SO}_2$  गैस निकलती है।

$\text{SO}_2$  के वातावरण में मिलने से सल्फर डाइआक्साइड ( $\text{SO}_3$ ), सल्फ्युरस अम्ल ( $\text{HSO}_3$ ) एवं गंधकाम्ल ( $\text{H}_2\text{SO}_4$ ) आदि का निर्माण होता है। (चित्र ४.२)। ये विभिन्न पदार्थ पौधों की कोशिकाओं में प्रवेश कर हानिकारक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। (देखिए चित्र ४.३) पूर्वी अमेरिका उत्तर-पश्चिम यूरोप जैसे क्षेत्रों के आते औद्योगिक क्षेत्रों में इतनी वृद्धि वायुमण्डल में उपस्थित है कि वर्षा के समय गिरने वाला जल, जल न होकर गंधकाम्ल ( $\text{H}_2\text{SO}_4$  सल्फ्युरिक एसिड) होता है। इस क्रिया को अम्ल वर्षा (एसिड रेन- acid rain) कहते हैं। अम्लीय वर्षा के जल से पत्थरों, संगमरमर आदि की सतह नष्ट हो जाती है, इसे स्टोन लेप्रसी (Stone leprosy) कहते हैं।

$\text{SO}_2$  का प्रभाव मनुष्य एवं पौधों पर अत्यधिक हानिकारक होता है,  $\text{SO}_2$  की अधिक सान्द्रता से पौधों से क्लोरोफिल नष्ट होने लगता है (क्लोरोसिस रोग)। कोशिकाएँ टूटने लगती हैं एवं अन्ततः अंग नष्ट हो जाते हैं या पूरे पौधे की मृत्यु हो जाती है (नेक्रोसिस)। यदि पौधे की मृत्यु न भी हुई तो प्लैजमोलिसिस, मेटाबोलिक क्रियाओं में अवरोधन एवं वृद्धि तथा उत्पादन में कमी हो जाती है।

### ४. नाइट्रोजन के आक्साइड

पेट्रोल चलित वाहनों के धूएँ, दहन-क्रियाओं एवं अनेक उद्योगों से

नाइट्रोजन आक्साइड (NO) नाइट्रोजन डाइ ( $\text{NO}_2$ ) एवं ट्राइआक्साइड ( $\text{N}_2\text{O}_3$ ) निकलते हैं। ये पदार्थ सूर्य-प्रकाश में हाइड्रोकार्बनों से क्रिया कर भूरे रंग का बहुत ही घातक धूम कोहरे (photochemical smog) का निर्माण करते हैं। धूम कोहरे में नाइट्रोजन डाइआक्साइड, ओजोन एवं होते हैं। यह धूम कोहरा मनुष्य के लिये कितना घातक है, इसका उदाहरण १९५२ में लंदन शहर की घटना से लगाया जा सकता है। वहाँ पाँच दिनों तक शहर इस प्रकार के धूम कोहरे से ढँका रहा, फलस्वरूप चार हजार लोगों की मृत्यु एवं अनेक हृदय-रोग एवं श्वसन रोग (bronchitis) से पीड़ित हुए।

### ५. एरोसोल्स (Aerosols)

एरोसोल्स उन रासायनिक पदार्थों को कहते हैं जो वाष्प एवं धूमिका (उपेज) के रूप में वायुमण्डल में बहुत अधिक बल के साथ छोड़े जाते हैं। एरोसोल्स ध्वनि से तेज गति से सुपर जेटयानों द्वारा निर्मुक्त धूएँ में होते हैं इनमें क्लोरोफ्लोरो कार्बन पदार्थ होते हैं जो हमारे वातावरण की रक्षक ओजोन परत (व्रवदम संलग्नत) को नष्ट करते हैं। ओजोन परत के नष्ट होने से सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी किरणें (नस. जतं अपवसमज तंले) हमारे वायुमण्डल में प्रवेश कर जीवधारियों को नुकसान पहुँचाती है।

### ६. स्मोग (Smog)

धूएँ एवं कोहरे (fog) के मिश्रण को स्मोग (Smog) कहते हैं। पिछले पृष्ठ में वर्णित प्रभावों के अलावा स्मोग से पत्थरों को क्लोरोसिस तथा नेक्रोसिस रोग हो जाते हैं।

### ७. एथीलिन (Ethylene)

वाहनों के धूएँ प्राकृतिक गैसों तथा कोयले के दहन एवं किसी भी कार्बनिक पदार्थ के अपूर्ण दहन से एथीलिन निर्मुक्त होती है। वातावरण में एथीलिन की अधिकता से आर्किड पौधों तथा कपास जैसे पौधों को हानि होती है।

वायु प्रदूषण की रोकथाम के उपाय - Air pollution prevention measures

वायु-प्रदूषणों को रोकने एवं नियंत्रित

करने हेतु दो प्रकार के उपाय किये जा सकते हैं:-

(i) प्रदूषक पदार्थों की हानिकारक गैसों को पृथक कर वायुमण्डल में विसर्जित करने के अलावा अन्य विधि से निष्कासित किया जा सकता है।

(ii) प्रदूषकों को अहानिकारक गैसों पदार्थों में परिवर्तित कर फिर उन्हें वायुमण्डल में मिलने दिया जाय।

प्रदूषक पदार्थों के पृथक्करण हेतु अनेक विधियाँ अपनाई जाती हैं। जैसे- छानकर (filtering), निःसादन (stelling), घोलकर या अधिशोषण (absorption) द्वारा। साथ में दिये चित्र में ४.४ में प्रदूषित वायु के कणों को निःसादन विधि से पृथक करने की विधि बतलाई है। इसमें प्रयुक्त उपकरण को चक्रवात (cyclone) उपकरण कहते हैं।

वायु प्रदूषण के नियंत्रण हेतु निम्न सामान्य उपाय किये जा सकते हैं-

(i) घरेल कार्यों के लिये धुआँ रहित ईंधनों के उपयोग को बढ़ावा देना।

(ii) मोटरकार जैसे वाहनों के धुएँ निकलने की नली पर उपयुक्त फिल्टर तथा पश्चज्जलक (जिमतइनतदमत) का उपयोग।

(iii) डीजल से संयोजी पदार्थ तथा सीसा (Pb) एवं सल्फर रहित पेट्रोल का उपयोग किया जाय।

(iv) स्वचलित वाहनों के इंजनों में ऐसे आवश्यक सुधार हो जिसमें ईंधन (पेट्रोल, डीजल) का पूर्ण आक्सीकरण हो सके।

(v) धुआँ छोड़ने वाले वाहनों पर पूर्ण रोक लगाना।

(vi) रेलों को अधिकाधिक विद्युत-इंजन से चलाना।

(vii) कारखानों की चिमनियों की ऊँचाई ठीक रखना।

(viii) कारखानों के लिये प्रदूषक नियंत्रक उपकरणों का उपयोग करना।

(प४) चिमनियों से निकलने वाले धुएँ का निष्कासन स्थल पर ही उपचारित करने का प्रयास ताकि प्रदूषक पदार्थ वायु में मिलने से पहले पृथक हो जाएँ।

(U) जन-चेतना एवं शासकीय प्रयास।

ग्रीन हाउस प्रभाव (Green House Effect)

अनेक वानस्पतिक उद्यानों, कृषि उद्यानों तथा नर्सरी आदि में ग्रीन हाउस होते हैं। ये ग्रीन हाउस वास्तव में काँच से घिरे ऐसे ग्लास हाउस होते हैं जिनके अन्दर का तापमान बाहर की अपेक्षा अधिक होता है। ग्रीन हाउस के अन्दर तापमान बढ़ने का कारण उसमें रखे पौधों द्वारा मुक्त की गई  $\text{CO}_2$  एवं जलवाष्य है जो कि बाहर नहीं निकल पाती एवं इनके कारण ग्रीन हाउस के अन्दर का तापमान बढ़ा रहता है। इन ग्रीन हाउसों की उपयोगिता पौधों को शीत के प्रकोप से बचाना होता है।

आजकल पृथ्वी के वातावरण के तापमान में जो वृद्धि हो रही है उसे ग्लोबल वार्मिंग (global warming) कहते हैं। इसका कारण वायु प्रदूषण से हमारे वातावरण में  $\text{CO}_2$ ,  $\text{CH}_4$ ,  $\text{CO}$ , CFC एवं  $\text{N}_2\text{O}$  (नाइट्रस अॅक्साइड) जैसी गैसों की मात्रा में वृद्धि होना है। जिस प्रकार से ग्लास हाउस में अन्दर का तापमान बढ़ता है उसी प्रकार से यदि पृथ्वी के आसपास के वातावरण को यदि ग्लास हाउस मान लिया जाये तो उक्त गैसों की अधिकता के कारण जो तापमान बढ़ रहा है वह उसे ग्रीन हाउस प्रभाव के समान ही है जो उद्यानों में मनुष्य द्वारा कृत्रिम रूप से बनाए जाते हैं। अतः ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण पृथ्वी पर 'ग्रीन हाउस' प्रभाव माना जाता है। जो गैसें ग्रीन हाउस प्रभाव बढ़ाती हैं उन्हें ग्रीन हाउस गैसें कहते हैं।

मृदा-प्रदूषण (Soil Pollution)

-पृथ्वी की सतह के सबसे ऊपरी भाग को मृदा (soil) कहते हैं। मृदा का निर्माण पृथ्वी की सतह पर जल एवं ताप जैसे अैजिविक कारकों तथा पौधों एवं सूक्ष्म जीवों जैसे जैविक घटकों से होता है। इसीलिये यह फसलों की उपज के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

मृदा में ऐसे कोई भी पदार्थ मिलने

या मृदा के घटक में से कोई पदार्थ निकलने पर यदि मृदा की उपजाऊ क्षमता, गुणवत्ता एवं भूजल प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तब हम उसे मृदा प्रदूषण कहेंगे। यह निम्न कारणों से होता हो सकता है-

(अ) अत्यधिक पेस्टिसाइड्स (Pesticides) का उपयोग-

अधिक उपज की लालच में कृषक फसलों पर अनेक प्रकार के कीटनाशक, कवकनाशक, कृन्तकनाशी एवं खरपतवारनाशी का उपयोग करते हैं। उक्त सभी प्रकार से रसायन जीवनाशक होते हैं इनमें विभिन्न प्रकार के (प) आर्गेनोक्लोरिन या क्लोरिनेटेड हाइड्रोकार्बन होते हैं। (डीडीटी, बी एच सी, एल्ड्रिन आदि) जो अपघटित नहीं होते एवं स्थायी रूप से भूमि का हिस्सा बनते हैं।

खाद्य-शृंखला के द्वारा इनकी मात्रा बढ़ती जाती है उसका कुप्रभाव उच्च स्तर के उपभोक्ता जन्तुओं पर पड़ता है अतः इनका उपयोग हानिकारक है।

(ii) आर्गेनोपेस्टिसाइड्स जिनका अपघटन तो हो जाता है किन्तु जो श्रमिक इन्हें खेतों में डालते हैं उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। मिलेथायोन, पेराथायोन एवं कार्बमेट्रस इसी श्रेणी में आते हैं।

(iii) अकार्बनिक पेस्टिसाइड्स- इनमें प्रमुख रूप से आर्सेनिक एवं सल्फर का उपयोग होता है जो कि हानिकारक हैं।

(iv) खरपतवारनाशी- ये रसायन भी स्थायी रूप से भूमि में रह जाते हैं एवं हानिकारक होते हैं।

(ब) रासायनिक खाद - बीमउप. बंस मितजपसप्रमत

इनके अत्यधिक उपयोग से भूमि में प्राकृतिक रूप से उपस्थित सूक्ष्म जीवों में मी लाकर भूमि की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव होता है। ये धीरे-धीरे भूमि द्वारा सोख लिये जाते हैं जो कि अन्ततः भूजल को विषाक्त करते हैं। खाद में मिले विभिन्न प्रकार के लवण खाद्य फसलों में मिलकर हानि पहुँचाते

हैं। उदाहरण के लिये पत्तियों, फलों एवं जल जब अत्यधिक नाइट्रेट युक्त हो जाते हैं तब ये जन्मुओं की आहार नाल में नाइट्राइट में बदलकर रक्त में प्रवेश करते हैं। रक्त में नाइट्राइट हीमोग्लोबिन से मिलकर ऐसे पदार्थों में बदल जाते हैं जिससे हीमोग्लोबिन की आक्सीजन वहन क्षमता कम हो जाती है। बच्चों के लिये तो यह स्थिति अत्यधिक खतरनाक होती है।

#### (स) औद्योगिक बहिःस्राव - Industrial effluents

इन बहिःस्राव में अनेक विषैले पदार्थ जैसे सायनाइड, क्रोमेट्स, अम्ल, क्षार एवं पारा, तांबा, जिंक, सीसा या केडमियम जैसी धातुएँ आदि मिले होते हैं जो मृदा में मिलकर उसे प्रदूषित करते हैं।

(द) भूमिगत खदानों से निरन्तर धूल के कण निकलकर वातावरण में मिलते रहते हैं जो उसके आसपास की वनस्पति एवं जन्मुओं के लिये अनेक प्रकार से हानिकारक होते हैं।

(इ) भूमि में लवण जमा होना - Salt to be deposited in the Land

विभिन्न कारणों से भूमि की सतह पर लवण एकत्र हो जाते हैं एवं ऊपरी सतह सफेद-सफेद दिखाई देने लगती है इस कारण से भूमि कम उपजाऊ या लगभग बंजर हो जाती है। भूमि का लवणीकरण (salination) निम्न कारणों से हो सकता है-

(i) आसपास की चट्टानों के क्षरण से,

(ii) जल निकासी की उचित व्यवस्था न होने से,

(iii) भूजल की सतह ऊपर उठने से,

(iv) भूमिगत एवं नहरों के जल में प्रचुर मात्रा में लवणों की उपस्थिति,

(v) रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग।

#### (ट) मृदा-क्षरण - Soil erosion

अच्छी उपजाऊ भूमि को कम उपजाऊ में परिवर्तित करने वाले कारकों में मृदा क्षरण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मृदा क्षरण बड़ी-बड़ी चट्टानों के टूटने,

वर्षा के जल-बाहर से (बाढ़ के द्वारा), रेगिस्तान में तेज हवाओं के चलने से, बाढ़ के दौरान नदियों के किनारे टूटने आदि से होता रहता है।

मृदा-प्रदूषण का नियंत्रण एवं रोकथाम के उपाय - Soil pollution control and prevention measures

मृदा-प्रदूषण को रोकने में मनुष्य की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है उनमें से प्रमुख हैं-

#### (अ) पेस्टिसाइडों का कम से कम उपयोग Minimal use of Pesticide

आजकल ऐसी फसलें विकसित हो चुकी हैं या की जा रही हैं जो रोग प्रतिरोधक होती हैं। अतः उन पर कीटनाशकों, कवकनाशकों आदि का उपयोग नहीं करना पड़ता।

(ब) अधिक रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से बचना एवं अधिकाधिक जैविक खादों (गोबर का कम्पोस्ट) का उपयोग करना जिससे उपजाऊपन यथावत रहे।

(स) छोटे बाँध एवं छोटी नहरों का निर्माण भूमि के लवणीकरण को कुछ हद तक कम कर सकते हैं। बड़े बाँधों से बड़े जलाशय बनते हैं। अधिक मात्रा में जल संग्रहण एवं बड़ी नहरों के निर्माण से आसपास की भूमि में अत्यधिक लवण जमा होते हैं एवं वाटर लागिंग (Water logging) भी हो जाता है।

(द) मृदा-क्षरण के कारणों को जानने के बाद उन पर रोक लगाने के लिये कुछ सिद्धान्त हैं, जो निम्नानुसार हैं-

(i) भूमि को वर्षाजल के प्रभाव से बचाना,

(ii) जल-बहाव को अत्यन्त संकरे पथ से नीचे की ओर जाने से रोकना एवं उसकी गति कम करना,

(iii) भूजल की मात्रा बढ़ाने के प्रयास,

(iv) भूमि-कणों के आकार बढ़ाने वाले उपाय करना,

(v) मैदानों में पेड़-पौधे लगाकर हवा, आँधी की गति को कम करना,

(vi) स्थान-स्थान पट्टियों के रूप में ऐसी वनस्पति उगाना जो बहते भूमि

(मृदा) कणों को पकड़कर रोक लें।

मृदा संरक्षण के उपाय - (Methods of soil conservations)

उपरोक्त लिखित सिद्धान्तों को द्यान में रखते हुए मृदा-संरक्षण के उपायों को निम्न श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं-

(i) जैविक विधियाँ इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की कृषि-प्रणालियों का उपयोग होता है। उदाहरण के लिये कंटूर खेती, पलवारना या मल्तिंग, फसल-चक्र, सूखी खेती आदि विभिन्न कृषि-प्रणालियाँ हैं।

(ii) यांत्रिक-विधियाँ कृषि योग्य भूमि में जल संग्रहण हेतु बेसिन बनाना एवं कंटूर टेरेसिंग करने से भी मृदा-संरक्षण हो सकता है।

(iii) अन्य विधियाँ वृक्षारोपण, नालियाँ बनाना, रेगिस्तानों में विशेषकर कोण पर वृक्ष लगाना (जो आँधी की गति को कम करे), मृदा-प्रदूषण को रोकने के प्रयास आदि ऐसी विधियाँ हैं जो मृदा-संरक्षण में लाभदायक हो सकती हैं।

पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने में मनुष्य की भूमिका - Man's role in maintaining the environment clean

पर्यावरण को प्रदूषित करने में यदि हम मानवीय गतिविधियों को ही जिम्मेदार मानते हैं तो प्रदूषित पर्यावरण के दुष्परिणामों से प्रकृति को बचाने के लिये प्रकृति संरक्षण के उपाय भी मनुष्य को ही करने होंगे। इस हेतु जल, वायु एवं मृदा प्रदूषण के कारण एवं प्रभाव के साथ पिछले पृष्ठों में उनके नियंत्रण एवं रोकथाम के उपायों पर भी चर्चा की गई है। इसी तरह अध्याय-३ में वनों का प्रबन्धन एवं प्रकृति संरक्षण के राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय प्रयासों का भी विस्तार से विवरण दिया गया है। इन सभी प्रयासों में प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं की जिम्मेदारी के अलावा उसे राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर किये जा रहे प्रयासों में भी यथाशक्ति सहायता देनी चाहिए।

साभार - जीव विज्ञान (एनसीआरटी प्रकाशन)

# पहले मासूम बचपन बचाओ !!!

देश के अन्दर रीति-रिवाज बचाने की बात होती है, प्रथाओं-कुप्रथाओं को बचाने के लोग भिड़ जाते हैं कोई मजहब बचाने की बात करता है कोई जाति या उनसे उत्पन्न विसंगतियां, लेकिन इस और किसी का ध्यान नहीं है कि पहले राष्ट्र का भविष्य, हमारी भावी पीढ़ी यानि आज का बचपन इसे बचाओ! आज राष्ट्र का भविष्य कहे जाने वाले बच्चों में नशाघोरी की लत इस तेजी से बढ़ रही है कि दस वर्ष की आयु में प्रवेश करते ही ज्यादातर बच्चे विभिन्न प्रकार के नशीले और मादक पदार्थों का सेवन करने लगते हैं। बच्चों में नशाघोरी की लत का अध्ययन करने वालों का कहना है कि ज्यादातर बच्चों को नशे की लत उनके वयस्क या हमउम्र नशाघोरों के जरिए ही लगती है। परिवार की उपेक्षा के कारण ये भोले-भाले बच्चे नशा कराने वाले को ही अपना मित्र और सच्चा हमदर्द मान लेते हैं और नशे की आदत में पड़कर हर तरह के शोषण का शिकार हो जाते हैं।

नशे की गिरफ्त में आए बच्चे जब मनचाहा नशा नहीं कर पाते हैं तो वे खून में बढ़ती मादक पदार्थों की मांग का पूरा करने के लिए शरीर के लिए घातक पदार्थों का भी सेवन करने लगते हैं, जैसे कि बोन फिक्स, क्यूफिक्स और आयोडेक्स। कई बच्चे तो पेट्रोल और केरोसिन सूखकर नशे की प्यास बुझाते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के नारकोटिक्स नियंत्रण बोर्ड और २०१३ की एक सरकारी रिपोर्ट से पता चला कि भारत में नशे के आदी हर पांच में से एक व्यक्ति की उम्र २९ साल से कम है।

विशेषज्ञों का मानना है कि अपने साथ के लोगों की देखावेखी, साथियों के दबाव और पढ़ाई की चिंता के कारण कई बच्चे तो ११ साल की उम्र से ही नशे के लिए ड्रग्स लेना शुरू कर देते हैं। इनमें से करीब ५ कीसदी की उम्र १२ से १७ साल के बीच पाई गई। वेघर बच्चों के बीच तो यह समस्या और भी गंभीर है। रिपोर्ट में पाया गया कि भारत के करीब दो करोड़ वेघर बच्चों में से

४०-७० कीसदी किसी ना किसी तरह के ड्रग्स के संपर्क में आते हैं और इनमें से कई को तो पांच साल की उम्र से ही नशे की लत लग जाती है।

बात केवल एक शहर या स्थान की नहीं है राजधानी दिल्ली से हजारों किलोमीटर दूर नवी मुंबई के अनेकों कोनों में स्कूली यूनिफर्म पहने बच्चों को अक्सर धास लूपी नशीले पदार्थ खरीदते देखा जा सकता है। नशे वाले ये पौधे वहीं उगाए जाते हैं और चोरी-छिपे उन्हें बेचा जाता है। बच्चों को ५० से १०० रुपये अदा करने पर कई दिन के लिए नशे की यह सामग्री मिल जाती है और आजकल इतनी रकम पाना बच्चों के लिए आम बात है। मांग बढ़ने के साथ ही इन नशीली चीजों में भी मिलावट की जाती है और इसमें रसायन, कीटनाशक पदार्थ और यहां तक की जूतों की पालिश भी मिलाकर बच्चों को दे दी जाती है। यह वेहद खतरनाक है और इन चीजों से और भी ज्यादा नशा होता है। ज्यादा समझने के लिए आमतौर पर किसी भी परचून या पान दुकान की से भोला गोली २ से ५ रुपये में मिल जाती है, जो असल में भांग से ही बनती है। लड़कियां धूम्रपान करने में हिचकती हैं ऐसे में उनके लिए गांजे का पेस्ट होता है श्वे इसे मसांडों पर रगड़ती हैं और यह खून में मिल जाता है। इसकी खुशबू भी माउथ फ्रेशनर की तरह होती है, इसलिए लड़कियां पकड़ में भी नहीं आतीं। जब बच्चों में इस तरह के नशीले पदार्थ की लत बढ़ती है तो उनकी जेवर्खर्च की मांग भी बढ़ जाती है। लेकिन सभी माता-पिता बच्चों की अधिक जेवर्खर्च की मांग पूरी नहीं करते। ऐसे में बच्चे चोरी करने लगते हैं। कई बार तो नशीले पदार्थ बेचने वाले लोग शुरुआत में बच्चों को मुफ्त पैकेट देते हैं और बाद में नशे के लिए अधिक रकम वसलते हैं क्योंकि उन्हें पता चल जाता है कि लत लगने के कारण बच्चे कहीं से भी पैसे का इंतजाम कर ही लेंगे। नशे के गुलाम ये बच्चे या तो बेमौत मर जाते हैं या फिर अपराध की अंधी दुनिया में प्रवेश

कर समाज और देश के लिए विकट समस्या बन जाते हैं। सरकार और समाज बच्चों को नशे की आदत से बचाने के जो भी उपाय कर रही हैं, वे पर्याप्त और प्रभावी नहीं हैं। इसलिए जरूरी है कि देश के भविष्य को पतन के रास्ते से बचाने के लिए परिवार से उपेक्षित, गरीब, अशिक्षित और बाल मजदूरी करने वाले बच्चों को नशे से बचाने के लिए गंभीरता से प्रभावी और कारगर उपाय किए जाने चाहिए।

इस विषय पर यदि शोधकर्ताओं की माने तो इसका सबसे बड़ा कारण संयुक्त परिवार के खत्म होने और एकल परिवार में माता-पिता दोनों के नौकरीपेश होने की वजह से कई घटे तक बच्चे किसी की निगरानी में नहीं रहते हैं और बच्चों की जिंदगी से स्थायित्व हटने लगता है। ऐसे में बच्चे अकेले में वहीं सब कुछ करना चाहेंगे जो उन्हें पसंद आता हो। ऐसी स्थिति में बच्चे अपने दोस्तों और इंटरनेट पर ज्यादा निर्भर रहने लगते हैं, जहां उन्हें गलत सूचना भी मिलती है, मसलन पोर्न मूवी से लेकर भांग और गांजे के लाभ की सूचना।

अधिकांश बच्चे इन बातों पर भी गौर करते हैं कि उनके अभिभावक भी धूम्रपान करते हैं तो इसका मतलब यह सब कुछ सामाजिक मान्यता प्राप्त कार्य है। इसमें कोई बुराई नहीं है। बीड़ी-सिगरेट, शराब आदि की लत बच्चों में कैसे पड़ती है, इस विषय पर मनोवैज्ञानिकों ने खूब अध्ययन किया है और वे बड़े विचित्र नतीजों पर पहुंचे हैं। उनका कहना है कि छोटा बच्चा जल्दी से जल्दी बड़ा होना चाहता है। आप बड़ों को सुहाने बचपन के गीत गाते सुनेंगे, मगर यथार्थ में ऐसा है नहीं। कई बच्चा खुश नहीं हैं बच्चा होने से। उसको लगता है- मैं शक्तिहीन हूं, स्वयं कोई निर्णय नहीं ले सकता। छोटी सी छोटी चीजों के लिए दूसरों से पूछना पड़ता है, मेरी कोई स्वतंत्रता नहीं है। बड़े लोग स्वतंत्र हैं। इसलिए, बच्चा जल्दी बड़ा होना चाहता है। लेकिन वह यह भूल जाता है उम्र में बड़ा होने की यह चाहत उसकी उम्र की खत्म कर रही है।

## हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस

दि. ७ अगस्त २०१७ सोमवार के दिन मनाइए

हैदराबाद सत्याग्रह में अपने प्राणों की आहुति देने वाले आर्य वीरों की पुण्य सूति में प्रतिवर्ष सभा के आदेशों की पूर्ति तथा कर्तव्य पालन के उद्देश्य से इस वर्ष श्रावण शुक्ल पूर्णिमा तद्नुसार सोमवार दिनांक ७ अगस्त २०१७ को प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर में सत्याग्रह बलिदान दिवस मनाया जाएगा। इसी दिन श्रावणी का पुण्य पर्व है। कार्यक्रम श्रावणी उपार्कर्म के साथ मिलकर निम्न प्रकार मनाया जायगा। प्रातः ८.३० बजे आर्य समाज मन्दिर में नगर निवासियों को बड़ी संख्या में आमन्त्रित करके यज्ञादि किये जाएँ। उपार्कर्म-कार्यक्रम के पश्चात व्याख्यान आदि का विशेष प्रवचन किया जाए तथा उपस्थित सब भद्र पुरुष एवं देविया सम्मिलित रूप से निम्न प्रकार मन्त्रों का पाठ करें।

१. ओ३म् ऋतावान् ऋतजाता ऋकोवृधो घोरासो अनृतदिव्वष। तेषां वसुम्ने सुच्छर्दिष्ट्यमे नमः स्याम वे च सुरयः॥

ऋग्वेद ७,६,६,१३

२. ओ३म् अग्ने ब्रतपते ब्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि॥

यजुर्वेद २, ५

३. ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृणवन्तो विश्वमार्यम्। अपधन्तो अराह्णः॥

ऋग्वेद १,६,३,५

४. ओ३म् उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्या अस्मभ्य सन्तु पृथिवी प्रसूताः। दीर्घं न आयु प्रतिबुद्ध्यमाना वयं तु भयं बलहृतः स्याम ॥

ऋग्वेद १,६,३,५

१. आर्य समाजों के पुरोहित अथवा अन्य कोई वेदज्ञ विद्वान् उपर्युक्त मन्त्रों का तात्पर्य इन शब्दों में पढ़कर प्रार्थना करायें। जो विद्वान् सदा सत्य के मार्ग पर चलते हुए सत्य की निरन्तर वृद्धि और असत्य के विरोध में तत्पर रहते हैं उनके सुखदायक आश्रय से हम सब सदा सुखी रहें और हम भी उनकी तरह मन, वचन और कर्म से पूर्ण सत्यनिष्ठ बनें।

२. हे ज्ञानस्वरूप सब उत्तम संकल्पों और कर्मों के स्वामी परमेश्वर हम भी आज से एक उत्तम ब्रत ग्रहण करते हैं जिसको पूर्ण करने की शक्ति आप हमें प्रदान कीजिए जिससे कि उस ब्रत को ग्रहण करने से हमारी सब ओर से उन्नति हो। वह ब्रत यह है कि असत्य का सर्वथा परित्याग करके हम सत्य को ही आचरण में लावें। आप हमें शक्ति दें ताकि हम अपने जीवन को पूर्ण सत्यमय बना सकें।

३. हे मनुष्यों तुम सब आत्मिक शक्ति तथा उत्तम ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए कर्मनिष्ठ बनकर उन्नति में बाधक आलस्य प्रमादादि दुर्गुणों का परित्याग करते हुए सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ सदाचारी धर्मात्मा बनो और बनाओ।

४. हे प्रिय मातृभूमि हम सब तेरे पुत्र और पुत्रियाँ तेरी सेवा में उपस्थित होते हैं। हम सर्वथा निरोगी, स्वस्थ तथा ज्ञान सम्पन्न होते हुए दीर्घ आयु को ग्राप्त हों और तेरी तथा धर्म की रक्षा के लिए आवश्यकता पड़ने पर हम अपने प्राणों की बलि देने को भी तत्पर रहें।

### धर्मवीरों के प्रति श्रद्धांजलि

श्रद्धांजलि अर्पण करते हम, करके उन वीरों का मान ।  
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होंने निज बलिदान ॥  
परिवारों के सुख को त्यागा, युवक अनेकों वीरों ने ॥  
कष्ट अनेकों सहन किये पर, धर्म न छोड़ा वीरों ने ॥  
ऐसे सभी धर्मवीरों के, आगे शीघ्र झुकाते हैं ॥  
उनके गुण-कर्मों को हम, निज जीवन में अपनाते हैं ॥  
अमर रहेगा नाम जगत में, इन वीरों का निश्चय से ।  
उनका स्मरण बनाएगा फिर, वीर जाति को निश्चय से ॥  
करें कृपा प्रभु आर्य जाति में, कोटि-कोटि हों ऐसे वीर ।  
देश धर्म हित खुशी-खुशी, जो प्राणों को अपने दे वीर ॥  
जगतपिता को साक्षी रख कर, यही प्रतिज्ञा करते हैं ।  
इन वीरों के चरण चिह्न पर, चलने का ब्रत धरते हैं ॥  
सर्व शक्तिमय दे बल ऐसा, धीर वीर सब आर्य बने ।  
पर उपकार परायण निश्चिन, शुभ गुणधारी आर्य बनें ॥

### धर्मवीर नामावली

श्यामलालजी, महादेवजी, रामाजी श्री परमानन्द ।  
माधवराव, विष्णु भगवन्ता, श्री स्वामी कल्याणानन्द ॥  
स्वामी सत्यानन्द महाशय, मलखना श्री वेदप्रकाश ।  
धर्म प्रकाश, रामनाथजी, पाण्डुरंग, श्री शान्ति प्रकाश ॥  
पुरुषोत्तमजी ज्ञानी, लक्ष्मणराव, सुनहरा वेंकटराव ।  
भक्त अरोड़ा, नाथुरामजो, नहूसिंह, श्री गोविन्दराव ।  
मदनसिंहजी, रतिरामजी, शिवचन्द्र, सदाशिव, तारचन्द्र ।  
श्रीयुत छोटेलाल, अशर्फीलाल तथा श्री फकीरचन्द्र ॥  
मणिकराव, भीमरावजी, महादेवजी, अर्जुनसिंह ।  
सत्यनारायण, वैजनाथ, ब्रह्मचारी दयानन्द नरसिंह ॥  
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरों का ।  
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन सब ही धीरों वीरों का ॥

### भवदीय

अग्निमीठे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्यिजम् रत्न धातमम्॥ १,१,१॥

पूर्ण रूप से हित करने वाले, यज्ञ के प्रकाश यज्ञ के प्रवर्तक, ऋतु के अनुसार यज्ञ करने वाले दिव्य विबुधो एवं ज्ञानियों की अपने पास बुलाने वाले रत्नों के धारण करने वाले तेजस्वी अग्रणी (नेता) के गुणों का वर्णन करता है।

## वेद प्रचार सप्ताह

तिथि श्रावण शुक्ल प्रतिपदा से श्रावण कृष्ण अमावास्या तक

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गत वर्ष कि भाँति इस वर्ष भी वेद प्रचार सप्ताह तिथि श्रावण शुक्ल प्रतिपदा संवत् २०७४, तदनुसार २४ जुलाई २०१७ सोमवार से २१ अगस्त २०१७ सोमवार तक बड़े समारोहपूर्वक सभी आर्य समाजों में मनाने का निश्चय किया गया है। इसका उद्देश्य मानवमात्र की परम पवित्र सत्यसनातन धर्म पुस्तक ऋग, यजु, साम एवं अथर्ववेद का आशामय संदेश जनता तक पहुँचाना है जिससे जनता में वैदिक धर्म, आर्य-संस्कृत और आर्य सभ्यता की प्रगतिशील व्यवहारिकता के प्रति सक्रिय आकर्षण एवं सूचि उत्पन्न होकर वेदाध्ययन का प्रवचन, वैदिक जीवन का संचार तथा पवित्र वैदिक वातावरण का निर्माण हो सके। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि समस्त आर्यसमाजों कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूर्ण प्रयास करेंगे।

### कार्यक्रम

१. श्रावणी-पर्व ७-८-२०१७ सोमवार को मनाया जाए। प्रत्येक आर्य परिवार में उस दिन सूर्योदय के समय परिवारिक यज्ञ हो।
२. परिवारिक यज्ञ से निवृत्त होकर सब आर्य नर-नारी अपनी संतानों सहित ८-३० बजे आर्य समाज मन्दिर में उपस्थित हो। तत्पश्चात् आर्य पर्व पद्धति के पृ. ११ से ११६ पर्यंत (तृतीय संस्करण संवत् २०४८) लिखित तिथि से सम्पूर्ण पद्धति सम्पन्न कराइ जाय। यज्ञ के पश्चात् वैदिक स्वाध्याय के महत्व पर किसी विद्वान का प्रवचन हो।
३. यदि वेद प्रचार का प्रबन्ध न हो सके तो समस्त आर्य नर-नारी यजुर्वेद ४० वे अध्याय का मिलकर अर्थ सहित पाठ करें।
४. उस दिन सब नर-नारी नूतन यज्ञोपवीत धारण करे जिन आर्य बालक-बालिकाओं का उपनयन नहीं हुआ हो तो इस पवित्र पर्व पर उनका उपनयन संस्कार अवश्य सम्पन्न कराया जाय।
५. प्रत्येक मनुष्य को विद्यपूर्वक वेदाध्ययन करना चाहिए। इस दृष्टिकोण से प्रत्येक आर्य को कर्तव्य है कि वह अपने पड़ोस के अशिक्षित नर-नारियों को यज्ञोपवीत धारण करने की न केवल प्रेरणा दें अपितु आर्य समाज मन्दिर में अधिक-से-अधिक संख्या में उन्हे आमन्त्रित कर यज्ञोपवीत द्वारा उन्हे दीक्षित भी करें।

### सप्ताह के शेष दिनों में

प्रातः समाज मन्दिर में विशेष यज्ञ और वेद पाठ का आयोजन किया जाए।

मध्याह्नः वेद प्रचार निधि में अधिक-से-अधिक धन इकट्ठा कर शीघ्र सभा कार्यलय को भेज दें।

रात्रि : समाज मन्दिर में अन्य सार्वजनिक स्थानों में वेद कथाँ हो तथा आर्य समाज के नये सदस्य बनाए जाएँ। शुद्धि, दलितोध्वार, गौ-रक्षा एवं सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्या के सम्बन्ध में चर्चा कर कार्य किया जाए।

### ऋषि भक्तों से विशेष निवेदन

प्राचीन आर्य परम्परानुसार यह वेद के श्रवण-श्रावण का मास है यदि पूरे मास नहीं तो सप्ताह भर ही क्यों न हो, प्रत्येक आर्य गृहस्थ को प्रतिदिन प्रातः सायं घर में यज्ञ और वेदों में से चुने हुए कुछ मन्त्रों का अर्थ सहित पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन अग्नि रूप भगवान को साक्षी रखकर वेद धर्मानुसार आचरण करने की प्रतिज्ञा करें। साथ ही वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार का व्रत लें जिससे अङ्गोस-पङ्गोस के लोगों में वैदिक वातावरण का निर्माण हो।

यह व्रत और दीक्षा का दिन है। इस दीक्षा में सबको विशेष रूप से कटिबद्ध होकर इसको उन्नत करने के उचित साधनों का संग्रह करना चाहिए और अपनी सभा को वेद प्रचार के लिए धन की चिन्ता से सदैव मुक्त रखना चाहिए। इसी में सबका कल्याण है। आर्य पुरुषों उठो, जागो और वेद ज्येति को सारे संसार में फैला दो। आर्य जनों संभलो, भामशाह की तरह अपने कर्तव्य को पहचानो और स्वयं तथा अन्यों से धन संग्रह करके शीघ्र सभा के कोष को भर दो। आर्य बन्धुओं मानव जीवन के अपने ऊपर चढ़े ऋग-बन्धनों को तोड़ने का यह उत्तम अवसर है। जाति की रक्षा का आप पर ऋण है और इस पवित्र दिन सब ऋणों से मुक्त होने का सक्रिय संकल्प कीजिए। आप पर सभा का भी ऋण है और इसे आपको ही उत्तराना है।

सभा कार्यलय में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू तथा तेलुगु में आर्य-साहित्य उपलब्ध है। प्रत्येक आर्य को साहित्य खरीदना चाहिए तथा प्रत्येक आर्य समाज के पुस्तकालय में आर्य-साहित्य होना चाहिए। सभा की ओर से तेलुगु हिन्दी संस्कार विधि पंच महायज्ञ विधि छपाई गई है। हर एक आर्य बन्धु इस पुस्तक को अवश्य अपने पास रखे ताकि सभी संस्कार स्वयं करा सकें।

सभा की ओर से आर्य जीवन मासिक का प्रकाशन हो रहा है। आप स्वयं ग्राहक बनकर, औरों को भी ग्राहक बनायें। सभा द्वारा प्रचारार्थ भेजे गये विद्वानों को मार्ग व्यय आदि से सम्पानित करके ही आप विदा करें। आशा है सदैव की भाँति इस सभा के प्रति आपका स्नेह एवं सहयोग सदा बना रहेगा।

### भवदीय

विद्वलराव आर्य, एम.एससी.एल.एल.बी., मंत्री सभा

हरिकिशन वेदालंकार, संयोजक

ठा. लक्ष्मण सिंह प्रधान सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र-तेलंगाना, महर्षि दयानन्द मार्ग, मुलतान बाजार, हैदराबाद - ५०० ०९५

# నిమంత్రణ

ఆయ్ ప్రతినిధి సమా ఆ.ప్ర. తెలంగాణ రాజ్య కె తాత్యాయధాన మే

ఆయ్ రాష్ట్రాజ్ బటకమపెట కె రోజున్చు సే

చుగ్గర ద్వయ కె ఆయ్ సమాజొ కా

## సామూహిక శ్రావణి ఉపాకం పం ఎం

హైదరాబాద ఆయ్ సత్యాగ్రహ బాలిదాన దివ్యస  
దినింక 019 అగస్ట 2019 సామయార కో ప్రాత: C.30 వజే సే  
చైదిక ఆశ్రమ కున్యా గృఖలు ఉమానగర, కుండనవాగ, కెగమపెట,  
హైదరాబాద మే ఆయోజిత కే !

### -: కాయఫ్రమ :-

ముద్దన యజ్ఞాపవిత థారణ, శ్రావణి ఉపాకం - పచ్చియ  
ప్రమా : డా. వసుధా శాస్త్రీ, ఆచార్ అరవిన్డ శాస్త్రీ జీ  
భజన : పండిత జీ శాస్త్రీ  
అధ్యక్షత : మాట్ శ్రీ రా. లక్ష్మణ సింహ జీ

ప్రశాప - ఆయ్ గ్రామిణియి సభా అం.ప్. నెఱంగాలా

ఆయ్ సత్యాగ్రహ కె బాలిదానియో కె ప్రతి శ్రద్ధాజ్ఞతి అపిత కీ జాఏగీ సభి ఆయ్  
వధ్య - సాపరిచార అధికారిక సంఖ్యా మే భాగ లేకర కాప్రథమ కో స్ఫుల కునాం !

ప్రమా : విఠులరావు ఆయ్  
మంత్రి : సంశోధక  
ప్రమా : విఠులరావు ఆయ్  
మంత్రి : సంశోధక

ప్రమా : విఠులరావు ఆయ్  
మంత్రి : సంశోధక  
ప్రమా : విఠులరావు ఆయ్  
మంత్రి : సంశోధక

## ఆప్యోన్మాస

॥ తీం ॥

అర్థప్రతినిధి సభ అ.ప్ర. తెలంగాణ వారి ఆధ్యాత్మంలో  
అర్థసమాజం బల్కమహేష, హైదరాబాద్ వారి సౌజన్యంలో  
జంతువుల ఆర్ సమాజముల

## సోముశ్శాస్త్ర శ్రావణి ఉపాకం ప్రమా మరియు హైదరాబాద్ ఆర్ సుత్తాగ్రహం బలిదాన ఇనము

తేది : 07 అగస్టు 2017 సోమవారము గం॥ 8-30 నొల నుండి తేది  
అత్యం కన్యా గురుతుల్, ఉమానగర్, కుండనబాగ్, బేగంపేట, పైదలుచుట్టుల్  
నిర్మించబడును. కావున ఆర్ బంధువులందరిని కుటుంబ సమేతముగా  
సెదరముగా అప్పున్నస్తున్నాము. అధిక సంభూల్ పొల్మాని కార్య క్రమమును  
జయ్యపుడము చేయగలరు.

## కార్యక్రమము

యజ్ఞాపవిత ధారణ, ప్రాపణి ఉపాకర్తల్, పర్వయజ్ఞము  
యజ్ఞ లప్పు : చాసుద కాస్త్రీ అధికారి అరథం కాస్త్రీ గాయ  
ధజనలు : పండిక ప్రయద్రీ కాస్త్రీ గాయ  
అధ్యక్షత : గా. శీ రాకూర్ లక్ష్మి సింగాగారు

అధ్యక్షులు అర్థప్రతినిధి సభ ఆప్తి - తెలంగాణ  
పైదాబాధారు ఆర్ సుత్తాగ్రహంలో అమరులైన ఆర్థాత్మికులకు తీక్షణజలి  
పుటైంపబడును. కావున అధిక సంభూల్ పొల్మాని కార్య క్రమమును జయ్యపుడు  
చేయగలరు.

ప్రమా : పాపులీరాపు ఆర్  
మంత్రి : హరికిశన బెదాలంకార  
ప్రథాన, మంత్రి  
మంత్రి : సంశోధక

ప్రమా : పాపులీరాపు ఆర్  
మంత్రి : హరికిశన బెదాలంకార

అర్థస్తునుటు  
బలిక్కపేట  
పైదాబాధారు

Date of Publication 2<sup>nd</sup> & 17<sup>th</sup> of every Month, Date of posting 3<sup>rd</sup> and 18<sup>th</sup> of every month

आर्य जीवन 18-07-2017

Registered-Reg. No. HD/783/2015-17

RNI No. 52990/93

## ఆర్యజీవన

ఎంట్లు-తెలుగు బ్లోగ్‌ప్లాట్ వెబ్‌సైట్  
Editor: Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna  
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.  
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946  
Annual subscription Rs. 250/- నుండి -

To,

# సామూహిక శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వ ఏం ఆర్య సత్యాగ్రహ బలిదాన దివస వైదిక ఆశ్రమ కన్యాగురుకుల వేగమపెట మే

మాన్య శ్రీ ప్రథాన జి / మంత్రి జి, ఆర్య సమాజ .....

సమస్త నమస్తి ।

ప్రతివర్ష కీ భాంతి ఇస వర్ష భీ ప్రతి సమాజ మే హిందీ-తెలుగు భాషా కే వెద విద్వానో నిమంత్రిత కర వెద ప్రచార కార్యక్రమ ఆయోజిత కరనే కా సమీ అధికారియో సే ప్రార్థనా హై । శ్రావణ మాస జులై కే 24 తారీఖ సే ఆరంభ హోకర అగస్ట కే 29 తారీఖ తక చలెగా । సమీ అధికారియో సే నియేదన హై కి వెద ప్రచార కే ఇస కార్యక్రమ మే అధిక సే అధిక పరిచారియో కో తథా గాంచు / శహర కే ప్రముఖ లోగో కో శామిల కర ఆయోజిత కరనే కా ప్రయత్న కరె । యి భీ ప్రయత్న కరె కి శరావ ఔర మాసాహర కే వికుంఢు భీ విశేష సామాజిక పహల కరె । వధికాల హై అత: పయావరణ కీ రక్షా హెతు జహాం యజ్ఞాది కా ఆయోజన కియా జా రహా హై వహాం పూరీ శ్రద్ధా కే సాథ పయావరణ రక్షా హెతు 90-20-50 పౌధే లాగానే కా కార్యక్రమ భీ ఆయోజిత కరె । ఇస సామాజిక పహల సే జనతా కే మధ్య సార్వజనిక తౌర పర లోగో కే మధ్య పహుంచనే కా ఆర్య సమాజ కో మౌకా మిలేగా ।

## నగర ద్వయ కీ ఆర్య సమాజో కా సామూహిక శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వ ఏం ఆర్య సత్యాగ్రహ బలిదాన దివస దినాంక 7-8-2017 సోమవార కే దిన ప్రాత: 9-00 బజే సే

వైదిక ఆశ్రమ కన్యాగురుకుల వేగమపెట మే

సామూహిక శ్రావణి ఉపాకర్మ పవ ఏం ఆయ సత్యాగ్రహ కే వాలిదానియో కో శ్రద్ధాంజలి అపీత కరనే కా కార్యక్రమ శ్రావణి పూర్ణిమా 7 అగస్ట 2017 సోమవార కే దిన ప్రతివర్ష కీ భాంతి ఇస వర్ష భీ నగరద్వయ కీ ఆర్య సమాజో కో ఓర సే సుభా కే తత్వావధాన మే ఆర్య సమాజ బలకమపెట కే సౌజన్య సే వైదిక ఆశ్రమ కన్యా గురుకుల, ఉమానగర, వేగమపెట మే మనాయా జాఏగా । శ్రావణి ఉపాకర్మ కార్యక్రమ దినాంక 7 అగస్ట 2017 సోమవార కే దిన ప్రాత: 9-00 బజే సే ప్రారంభ హోగా । నగరద్వయ కీ ఆర్య సమాజో కే అధికారియో వ ప్రముఖ కార్యకర్తాయో తథా సమస్త ఆర్య బంధుయో సే నియేదన హై కి శ్రావణి ఉపాకర్మ కార్యక్రమ మే సపరివార అధిక-సే-అధిక సంఖ్యా మే పథారకర కార్యక్రమ కో భవ్య మూల సె సమ్పన్న కరనే మే సహయోగ ప్రదాన కరె ।

ధన్యవాద ।

ఆర్య ప్రతినిధి సభా  
ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ

భవదియ

ఆర్య సమాజ బలకమపెట  
హైదరాబాదు

Ph : 040-66758707, 24756983, 24753827, 23400363, Mobile : 9989909530, 93933020261.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR  
Editor Vithal Rao Arya • acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

నుండి - : శ్రీ విఠలరావు అస్టి. మంత్రి సభా నే సభా కీ ఓర సే ఆకృతి ప్రెస చికిటపల్లి మే ముద్రిత కరువా కర ప్రకాశిస్త కియా ।

సంపాదక: శ్రీ విఠలరావు అస్టి. మంత్రి సభా నే సభా కీ ఓర సే ఆకృతి ప్రెస చికిటపల్లి మే ముద్రిత కరువా కర ప్రకాశిస్త కియా ।

ప్రకాశక: ఆర్య ప్రతినిధి సభా ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన బ్యాజారు, హైదరాబాదు తెలంగాణ-95.